समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

अक्टूबर २००५ ♦ वर्ष ५५ ♦ अंक १० ♦ एक प्रति १० रुपए ♦ वार्षिक १०० रुपए

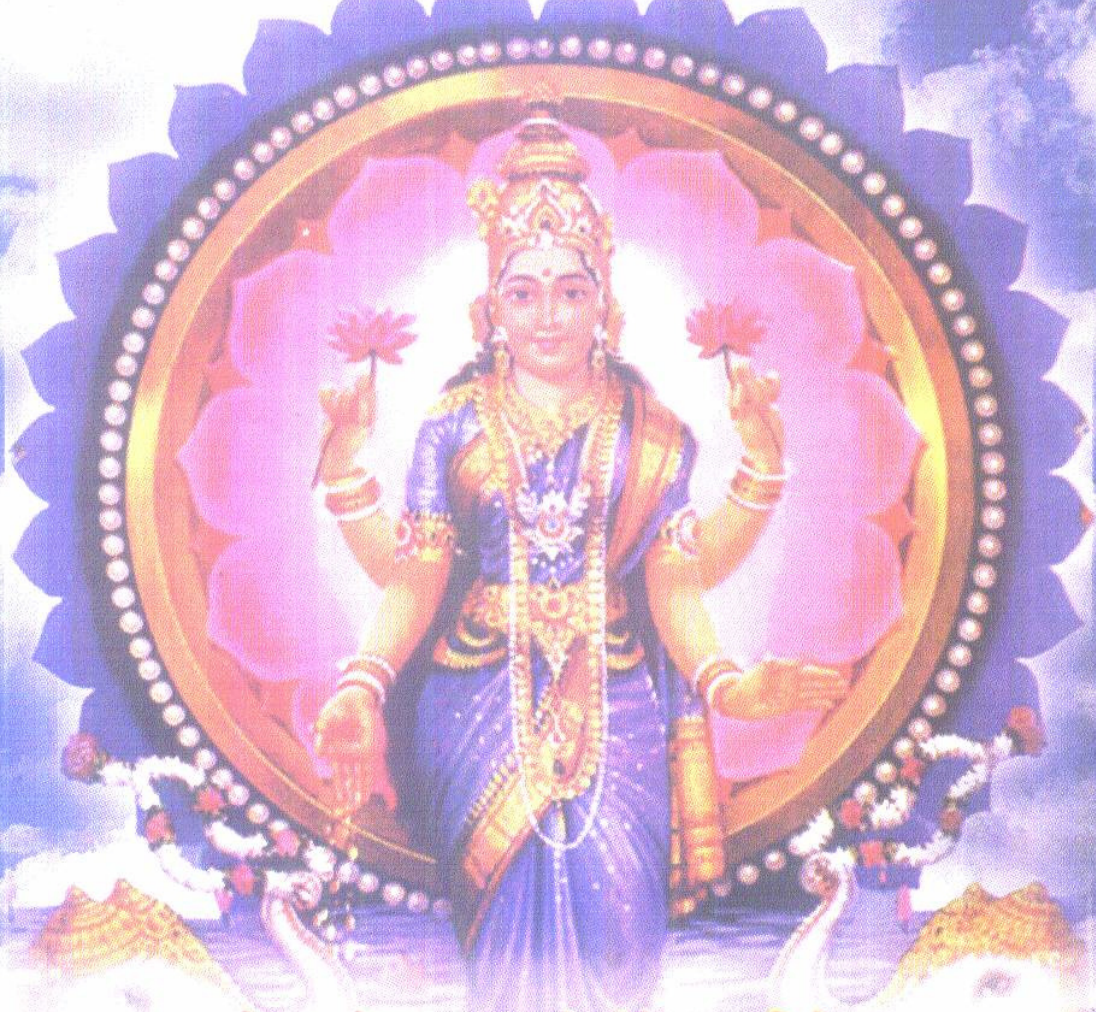

नमो नमस्ते महामाय श्री पीठे सुर पूजिते।
शंख चक्र गदा हस्ते महा लक्ष्मी नमोस्तुते॥

विष्णुप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं जगद्वते।
अर्घं तोत्रे नमस्तुभ्यं समृद्धं कुरु में सदा।

केन्द्रीय सम्मेलन, प्रादेशिक सम्मेलन, देश व्यापी सभी शाखा सभाओं के सदस्यों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

FinOlex

Sanitation & Plumbing Systems

- SWR System for soil, waste & rain water
- ASTM pipes for plumbing application
- Casing pipe for borewell application
- Ribbed screen pipes
- Pressure pipe & moulded fittings for agriculture, potable water supply, sewerages etc.

Manufacturers

Finolex Industries Ltd., Pune

E mail : pipes@finolexind.com

www.finolex.com

FOR TRADE ENQUIRIES CONTACT :

PRABHAT MARKETING CO. LTD.

4, Synagogue Street
Kolkata - 700001
Dial : 2242-2585, 2242-4654
E-mail : rohitashwaj@hotmail.com

दीपावली की शुभ व मंगल कामनाओं सहित

इस अंक में

अनुक्रमणिका	३
जनवाणी	४-५
कविता : आओ अन्तर्ज्योति जलायें / *श्री तारादत्त निर्विरोध*	५
संपादकीय / *श्री नन्दकिशोर जालान*	६-७
अध्यक्ष की कलम से / *श्री मोहनलाल तुलस्यान*	८
संयुक्त राष्ट्र के साठ वर्ष / *श्री सीताराम शर्मा*	९-१०
औड़ो आवै मिनख कै... / *श्री भानीराम सुरेका*	११
उचित नहीं है परम्पराओं का ढोल पीटना / *श्री हीरालाल सोमानी*	१२
कविता / बांधना चाहा मन को / *श्रीमती कोमल अग्रवाल*	१२
आपका व्यक्तित्व आपका अस्तित्व - *श्रीमती अनिता अग्रवाल*	१३
कविता / सुराज / श्रीमती देवी चितलांगिया	१३
स्वप्नों के सौदागर की सोनेरी पांखा वाली तितलियां / *श्री बंशीलाल बाहेती*	१४-१६
कविताएं / अन्तर्द्वन्द्व / *अनु: श्री रामनिवास लखोटिया*	१६
कविताएं / पंछी / *श्री परशुराम तोदी*	१६
परिवर्तन नहीं नया निर्माण / *श्री वीरभद्र शिरोमणि*	१७
समरस समाज के लिए आवश्यक है अन्तर्जातीय विवाह / *श्री सी.एल. सांखला*	१८
धरा को उठाओ, गगन को झुकाओ / *श्री केवलचन्द मिमाणी*	१९
कविता / कवि और पीड़ा / *श्रीमती कोमल अग्रवाल*	१९
भगवान कैयो हो / *डॉ. सूर्यबाला*	२०-२१
कविता / पराई भीड़ री नदी / *डॉ. कृष्ण बिहारी सहल*	२१
युवाओं के समक्ष विकल्प प्रस्तुत करें / *श्री पवन जैन*	२२
निरक्षरता को दूर करने में मारवाड़ी समाज की भूमिका / *श्री सीताराम छापरिया*	२३
कैसी हो शिक्षा / *डॉ. दिनेश मणि*	२४
सौन्दर्य : जिज्ञासा और रहस्य का केन्द्र / *डॉ. तारादत्त निर्विरोध*	२५

युग पथ चरण

❐ अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक का कार्यवृत्त, वार्षिक साधारण सभा का कार्यवृत्त सहित उत्कल के प्रांतीय अध्यक्ष का निर्वाचन, बिहार, झारखण्ड, पूर्वोत्तर आदि प्रांतीय सम्मेलनों की रिपोर्टों के साथ अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन एवं अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच की भी रिपोर्टें। २६-३४

समाज विकास

अक्टूबर, २००५

वर्ष ५५ ● अंक १०

एक प्रति- १० रु.

वार्षिक- १०० रु.

समाज विकास

१. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
२. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
३. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
४. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
५. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
६. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
७. भारत के कोने-कोने में फैले हुए ९ करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
८. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, १५२-बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७, फोन : २२६८-०३१९ के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा इलस्ट्रेटेड इंडिया प्रेस, ७४, लेनिन सरणी, कोलकाता- ७०००१३ में मुद्रित।

संपादक-नंदकिशोर जालान

ज न वा णी

इस स्तम्भ के अंतर्गत सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विषयों पर पाठकों के मतों का स्वागत है। साथ ही समाज के आंतरिक एवं गहन विषयों तथा समाज विकास में प्रकाशित सामग्री पर आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव भी आमंत्रित है।

- सम्पादक

'अन्तर्जातीय विवाह' समाज को लगा दाग है। आज उसकी भयानकता भले ही महसूस ना हो, पर भविष्य में बच्चे धर्म-बंधन तोड़ेंगे। धर्म-बंधन ही नहीं रहा तो नीति-बंधन वर्ग की अपेक्षा नहीं की जा सकती। इससे बचना हो, समाज को बनाये रखना हो तो, समाज की कुप्रथाओं को पहले रोकना होगा, दहेज, भ्रूण हत्या, शादी का अवास्तव खर्च रोकना होगा। कोई समाज 'अंतर्जातीय विवाह' का दिल से स्वागत नहीं करता। आखिर किसी भी परिवार या समाज की अपेक्षाएं थोड़ी-बहुत फरक से एक सी ही होती है तो क्यों न उसे समाज में ही - पूरा करें। वैसे भी ऐसे विवाह बहुत सफल होते हुए नजर नहीं आते ऐसे परिवारों का सर्वे होना जरूरी है। उनके अनुभवों को परखना होगा, उनके कटु अनुभवों को युवा पीढ़ी के सामने रखना होगा। ऐसे परिवार कैसे दोनों समाज से ठुकराए जाते हैं उनके बच्चों के भविष्य के बारे में होने वाले प्रश्नचिन्ह और समस्याओं को युवा पीढ़ी के सामने रखकर उनकी आंखें खोलने का वक्त आ गया है।

- सौ. सरोजिनी एम. कासट
जलगांव (महाराष्ट्र)

नई प्रेरणा देता हमको,
सदा 'समाज विकास' है।
धन्य लेखनी संपादक की
भरती नव विश्वास है।।
महाभाग अध्यक्ष हमारे,
देते नया प्रकाश हैं।
शर्मा सीताराम मान्यवर,
भरते नव उल्लास हैं।।
सुन्दर रचनाओं से मंडित,
इस पर सबकी आश है।
अंधकार को दूर भगाकर,
भरता नया उजास है।।
आनन्दित कर देता सचमुच,
मिलता जब प्रति मास है।
बढ़ता रहे प्रगति के पथ पर,
यह सुन्दर अभिलाष है।।

'समाज विकास' सितम्बर अंक हस्तगत हुआ। सम्पादकीय के अंतर्गत व्यक्त विचारों ने काफी प्रभावित किया। सम्पादक जी का चिन्तन बहुत ही प्रेरक एवं दिशा देने वाला है। साहित्य एवं साहित्यकारों के संदर्भ में अध्यक्ष की कलम से नि:सृत विचार बहुत ही सुन्दर तथा हृदय स्पर्शी हैं। अध्यक्ष जी का यह कहना कि साहित्य के बिना जीवन नीरस और अर्थहीन है, पूर्णत: सत्य है। सर्वश्री भानीराम सुरेका, राम अवतार पोद्दार, डॉ. तारादत्त निर्विरोध, रामनिवास लाखोटिया, हनुमान प्रसाद सरावगी तथा राजेन्द्र शंकर भट्ट के आलेखों से अंक की सुन्दरता में चार चांद लग गये हैं। साहित्यकार श्री कमलेश्वर द्वारा मारवाड़ी समाज के बारे में की गई टिप्पणी काफी दुर्भाग्यपूर्ण एवं भर्त्सना के योग्य है।

- युगल किशोर चौधरी
चनपटिया, बिहार

यद्यपि समाज विकास पत्रिका मारवाड़ी समाज के उत्थान को लेकर ही चलती है, परन्तु अन्य समाजों के लिए भी इसमें कुछ लेख यदा-कदा लाभदायक होते हैं। मुझे पत्रिका जंची है। बधाई।

- विश्वबन्धु, फरीदाबाद

५/६ मास स्यूं 'समाज विकास' बन्द है। पूर्व में ७/८ अंक नियमित मिल्या था। आपरो विशेषांक १२ मास पछै हाथ आयो। आप बड़ा हो अर १.११.०५ नै मैं ७२वैं वर्ष में प्रवेश करूंगा सो आपको स्नेहाशीर्वाद चाहिजै। मैं तो अनुगृहित भी माँडूँ अर अनुग्रहीत भी। कलकत्तै में संस्था-सम्पालन अर पत्रिका सम्पादन में आप सर्वोच्च आदर्श हो।

- अम्बू शर्मा, नैणसी, कोलकाता

अगस्त अंक में विस्तृत रूप से इक्कसवीं शताब्दी में मारवाड़ी समाज के संदर्भ में अनेक जानकारियां प्राप्त हुईं जो अपने आप समाज विकास में नया आयाम जोड़ने की बात कही जावे तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। आज की युवा पीढ़ी को स्पष्ट दिशा एवं दृष्टि की आवश्यकता है, जो अच्छाई-बुराई को पहचान सके और बदलते जमाने के साथ कदम-दर-कदम अग्रसर होती चले। सितम्बर अंक में महात्मा गांधी के प्रेरक प्रसंग श्री लाखोटिया द्वारा उधृत काफी जानकारीयुक्त, प्रेरणाप्रद और सराहनीय है।

- लक्ष्मी नारायण शाह, राउरकेला

'समाज विकास' सितम्बर अंक प्राप्त हुआ। पठन-पाठन से इसमें प्राप्त लेखों से जीवन धारा को सही दिशा में ले चलने की प्रबल संभावनाएं प्राप्त हुईं। 'समाज विकास एक मूल मंत्र' लेखक जिसे श्रद्धेय नन्दकिशोर जी जालान ने लिखा है, अपने-आप में एक अनूठा, प्रेरणाप्रद एवं दार्शनिकता से भरा लेख है। समाज के विकास की विवेचनाओं पर बहुत ही बारीकी से प्रकाश डाला गया है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि ऐसे उत्कृष्ट लेखों से प्रेरणा लेकर अपने आप में परिवर्तन लाकर एक ऐसे मानव का रूप धारण करे जिससे समाज के हर तबके के व्यक्ति को लाभ पहुंचे। भविष्य में भी ऐसे प्रेरणादायक लेखों की कामना करता हूं।

- सत्यनारायण तुलस्यान
मुजफ्फरपुर (बिहार)

'समाज विकास' सितम्बर ०५ अंक प्राप्त हुआ। बड़ा अच्छा लगा। 'मारवाड़ी समाज के विरुद्ध कमलेश्वर की टिप्पणी पर तीखी प्रतिक्रिया / उत्कल की धरित्री भी' कालम में विभिन्न व्यक्तियों की टिप्पणी भी पढ़ने को मिली। 'धरित्री' अखबार के संपादक के खिलाफ मेरे लेख के शीर्षक को जरा फेर-बदल कर प्रकाशित किया गया, जो जरा पढ़ने में अटपटा सा लगता है। 'धरित्री' की ये कैसी ओछी मानसिकता' - प्रकाशित कर देते तो ज्यादा बेहतर होता। प्रकाशन के लिए धन्यवाद।

- ईश्वर चन्द जैन 'पत्रकार'
टिटिलागढ़

खुशी की बात है कि हम सभी अखिल भारतीय समिति के कार्यकारिणी के सदस्य द्वितीय सभा में एकत्रित हुए। नये युग की शुरूआत इसी कामना के साथ कि हम सभी के कदम भी नित नूतन पथ पर अग्रसरित होते रहेंगे। नये-नये सामाजिक कार्य होते रहेंगे और हमारे समाज की कीर्ति पताका चारों तरफ फहराती रहेगी,

यश के उतुंग शिखरों तक,
इसके अपने सोपान रहे।
कीर्ति-पताका फहरे चतुर्दिक,
नित होता अनुसंधान रहे।।

समाज को गतिशील बनाये रखने के लिए इस तरह के बैठकों की आवश्यकता पड़ती है जहां विचार-विमर्श कर समाज को दिशा देने के लिए नीति-निर्धारण किया जा सके। इसी परिप्रेक्ष्य में समिति के पदाधिकारीगण समय-समय पर जिला एवं प्रदेश के शाखाओं में बैठकें लेते रहे हैं। सम्मेलन के सामने चुनौतियां तो अनेकों आएंगी और इन चुनौतियों को पूरा करने का प्रयास रहेगा ही। अत: हम सभी का पूर्ण दायित्व बनता है कि हम सभी कंधे से कंधा मिलाकर सामाजिक कार्य करते रहें, समाज को आगे बढ़ाते रहें।

- गौरीशंकर अग्रवाल, बलांगीर

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन इधर के वर्षों में काफी सक्रिय होता जा रहा है। अपना भवन भी हो गया इससे कार्य कुशलता एवं संगठन और मजबूत होगा ही। अध्यक्ष श्रीमान् मोहनलालजी तुलस्यान, पूर्व अध्यक्ष श्री नन्दकिशोरजी जालान भी काफी अनुभवी एवं संघ संस्थाओं को अग्रपंथी में रखने का ज्ञान रखते हैं। इस वजह निरन्तरता एवं सम्मेलन की और उन्नति अर्फ अग्रसर ले रहा है। आप लोगों को हार्दिक बधाई है।

- चिरंजीलाल अग्रवाल, पूर्व अध्यक्ष
नेपाल राष्ट्रीय मारवाड़ी परिषद्

पारदर्शी-परख

''समाज विकास'' पढ़मिला, हमेंपरमसन्तोष।
भरा बिन्दु में सिन्धु ज्यों, ज्ञानामृत का कोष।।
ज्ञानामृत का कोष, धर्म का मर्म बताए।
मारवाड़ी सम्मेलन का मुख-पत्र आए।।
नंद किशोर जालान, ''पारदर्शी-विद्वान''।
भारत-कुल-किरीट-भूमि है ये राजस्थान।।

- सन्त ॐ पारदर्शी
पारदर्शी साधना केन्द्र, उदयपुर

आओ, अन्तर्ज्योति जलायें

दीवाली की शुभ बेला में, आओ, अंतर्ज्योति जलायें।
बहुत जलाये माटी दीपक,
लेकिन नहीं मिटा अंधियारा।
बहुत किया लक्ष्मी का पूजन,
मगर न उमड़ी वैभव धारा।।
अंधकार गहरा कुटियों में, वहां नया आलोक लुटायें।
भाव आसुरी मिटा हृदय के,
छिटका दें नूतन उजियारा।
शोषण, मत्सर, द्वेष मिटाकर,
तोड़े हम अधर्म की कारा।।
नई मनुजता को कर पुष्पित, शांति-रागिनी मधुर बजायें।
भ्रष्टाचार न मिटता जब तक,
तब तक क्या सच्ची दीवाली ?
बंधु-भावना जब तक लुंठित,
छलक न सकती रस की प्याली।।
स्वाहा कर आतंकवाद को, शान्ति, अहिंसा को फैलायें।
दीवाली के शुभ उत्सव पर,
सुन्दर हो संकल्प हमारा।
एक रहेंगे, नेक रहेंगे,
विकसित होगा देश दुलारा।।
नूतन गति चरणों में भर कर, नई प्रगति नित करते जायें।
दीवाली की शुभ बेला में, आओ, अन्तर्ज्योति जलायें।।

- युगल किशोर चौधरी, चनपटिया (बिहार)

प्रश्न है हमारी अस्मिता का

✍ नन्दकिशोर जालान

आज हम सभी इक्कीसवीं सदी के नागरिक बन गये हैं, जो थोड़े से अन्तराल के बाद देश व समाज की समस्याएं को नये तौर तरीकों से काफी प्रभावित करेगी, जिनका कुछ क्षेत्रों में अवलोकन प्रारम्भ हो चुका है।

युवा पीढ़ी हमारे समाज व राष्ट्र की आधारशिला होती है। इसी के कन्धों और कृतित्व पर हमारे देश का भविष्य टिका है और यही उसे सद्गति देने के जिम्मेदार हैं।

अथर्ववेद में कहा गया है - तुममें जितनी जैसी भी शक्ति हो, अपनी समता के अनुसार सृजन अवश्य करो, अन्यथा ईश्वर द्वारा रचित इस भू मण्डल में तुम्हारा कोई उपयोग नहीं है। तुम्हारी क्षमताओं की सार्थकता तुम्हारे कृतित्व में है। सृजन की तुम्हारा धर्म है, कर्म है।''

जीविकोपार्जन हर व्यक्ति का प्रथम व सुनिश्चित प्रयास है। लेकिन उसके साथ 'सृजन' के लिए सर्वोच्च शिक्षा की आवश्यकता है। वगैर शिक्षित हुए नव-चिन्तन नव पथ की खोज संभव नहीं है। वेद व पुराणों के रचयिताओं के बाद नये कृतित्व की आवश्यकता समाप्त नहीं हो गई। इस असार-संसार में हर दिशा व क्षेत्र में परिवर्तन होते रहते हैं और उनके परिप्रेक्ष्य में शिक्षित व्यक्तियों के समूह को अपने चिन्तन से समाज व देश की शक्ति को नये पथ की ओर मोड़ देनी पड़ती है।

आज परिवेश तेजी से बदलता जा रहा है। दुनिया सिमट कर छोटी सी हो गई है और इसके किसी भी कोने से अन्य किसी भी जगह के व्यक्ति से आप दो-चार मिनट में सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं। एक ओर आकाश का छू लेने की आकांक्षा हर एक के मन में पेगे मार रही है तो दूसरी ओर हमारे पांव के नीचे की जमीन का अवलोकन भी आवश्यक है।

हमें भूलना नहीं है कि गत शताब्दि में युवा शक्ति ने अभूतपूर्व कर्तव्य दिखाये थे। महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, लाला लाजपत राय एवं अपने समाज के अनगिनत लोग आदि द्वारा देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ी गई लड़ाई के सिरमौर उस युग के युवा थे जिनके साथ अपना समाज का अवर्णनीय सहयोग था। तत्कालीन सामाजिक कुरीतियों से समाज को निस्तार दिलाने वाले समाज के एक से एक उद्भट कार्यकर्ता जिनमें पुरुष व नारी वर्ग दोनों ही सहभागी थे। सामाजिक परिवेश व मान्यताओं में जिस परिवर्तन को स्थापित किया, उसके कारण आज से ८०-९० वर्ष पहले के जमीन की बात करने पर आकाश-पाताल का अन्तर दिखाई देता है और आज के युग के अनुकूल समाज का रूपक उभर कर आया है।

अपना देश भारत एक महान देश है। आने वाले समय में दुनिया के सिरमौर देशों में इसकी गिनती होगी। लेकिन इसे वास्तविकता देना युवावस्था वाले लोगों के सकारात्मक दायित्व बोध व मानसिकता पर निर्भर है। क्या करणीय है और क्या नहीं, इसके सात्विक विवेचन पर उनके जोश खरोश से देश आधुनिकतम निर्माण के कदम-दर-कदम बढ़ता है।

भारतीय अर्थ व्यवस्था नया मोड़ ले रही है। 'वैश्वीकरण' के कारण अनेक नई चुनौतियां युवाशक्ति के सामने आई हैं। अनेक नये उद्योग स्थापित हो रहे हैं जिनकी आधारशिला बौद्धिक स्तर पर है। चूंकि हमारा देश गणितप्रधान है, इसलिए आस्था, विश्वास, श्रद्धा व नैतिकता के बल पर उदारीकरण हमारे युवाओं की प्रगति में बहुमूल्य अवदान कर सकेगा।

मेरा विश्वास है कि हमारे युवक अन्य देशों के युवकों से किसी बात में कम नहीं है, यदि उन्हें अपनी शक्ति का भान हो। आज दुनिया के विभिन्न देशों से प्रद्योगिकी व अन्य क्षेत्रों में सहभागिता के लिए निरन्तर आ रहे बुलावे इसके प्रतीक उदाहरण हैं। एक छोटे से दृष्टांत के अनुसार अमेरिका में ३८ प्रतिशत डाक्टर, १२ प्रतिशत वैज्ञानिक, ३६ प्रतिशत नशा के वैज्ञानिक, ३४ प्रतिशत माईक्रोशॉफ्ट कर्मचारी आदि अनेक क्षेत्रों में भारतीय ही बताये जाते हैं। हमें भूलना नहीं चाहिए कि दुर्घटनाग्रस्त स्पेशक्राफ्ट में अन्तरिक्ष में पहुंचने वाली सुश्री 'चावला' हरियाणा की थी।

संवेदनशीलता समाज का आभूषण है जिस पर हम सभी गर्व कर सकते हैं। निकटवर्ती आवश्यकता के अनुसार सहयोग करना हमारा संस्कार है। तथापि में कहना चाहूंगा कि अपने समाज की एकजुटता आज की महती आवश्यकता है और हमारे युवाओं और युवतियों को इस दिशा में पूर्णरूपेण सक्रिय रहना है। साथ ही समाज में आज भी प्रचलित कुरीतियों एवं अवगुणों पर गंभीरता से विचार कर उन्हें उसी प्रकार निष्कासित कराने का भार युवाओं पर उसी प्रकार है जिस प्रकार विगत शताब्दी में हमारे बुजुर्गों - उस युग के युवाओं - ने करवाया था। साथ ही राष्ट्रीय व प्रादेशिक राजनीति में हमारी घटी सहभागिता को वापस सुधारने के प्रति भी हमारे

सकारात्मक दृष्टिकोण की सर्वाधिक आवश्यकता है।

लेकिन आज देश व समाज विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति कर रहा है तो उसके साथ कुछ नये जटिल प्रश्न उभर कर आ रहे हैं। इनमें प्रधान है राजनीति में पुनः प्रवेश करता हुआ ''धार्मिक'' स्लोगन व कानूनी कार्यवाही में कमी, और अनेक स्थानों पर उभरती ''स्थानीय मानसिकता''। कभी कहां और कभी कहां इसके उदाहरण सामने आ रहे हैं।

देश के विभिन्न भागों की बात क्या करें, अभी हमारे पास तीन संदेश आये हैं- (१)- श्री राजू खेमका ने तिनसुकिया से लिखा है कि गांवों में बसे लोग वहां से शहरों को आ रहे हैं। (२)- श्री केडिया का बिहार का पत्र भी इसी बात की पुष्टि करता है और (३)- सर्वाधिक महत्व की बात बिहार प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा 'नगर आरक्षी अधीक्षक' को दिए गए सम्मान समारोह में उनका कहना कि ''लूट की घटनाओं को रोकने के लिए सुरक्षा व्यवस्था की गई है, आप रुपये लेकर बैंक जाते हैं तो उसकी सूचना देने पर सुरक्षा प्रदान की जाती है।'' प्रश्न उठते हैं कि लोग जिन गांवों में वर्षों से रहते आए हैं वहां से क्यों बोरिया-बिस्तर समेट रहे हैं और बैंक जाने वाले हजारों लोगों को सुरक्षा दी जा सकती है क्या- जो कि एक असंभव प्रक्रिया है।

उत्तर प्रदेश के मउ में 'भरत-मिलाप' के कार्यक्रम पर भड़की हिंसा के कारण कई दिनों से जारी कर्फ्यू तथा असम के एक इलाके में अनेक मकानों को आग के हवाले कर देना आदि देशव्यापी नई उभर रही समस्याएं हैं।

आज याद आ रही है कलकत्ता की वह घटना जब कुछ अराजकता फैलते ही तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने ऐसी राजकीय व्यवस्था की थी कि सब दंगाइयों के होशों-हवाश गायब हो गये थे।

समस्याएं बीसवीं शताब्दी के विभिन्न समयों पर थी लेकिन समाज के उस समय के युवा वर्ग ने उनका समीकरण कराने में कोई कोताई नहीं की थी। बड़े बूढ़े नहीं, उस समय के युवकों को ही पूरा श्रेय जाता है।

अपने समाज की अस्मिता देश के हर शहर, गांव व स्थान पर पूरे सम्मान के साथ प्रदर्शित थी। लेकिन अब इसमें बदलाव आ रहा हो तो यह अत्यंत आवश्यक है कि हमारे समाज के सभी वर्ग जिनमें युवा समाज का सर्वाधिक योगदान जरूरी है, एक जुट होकर सोचे समझें कि परिवर्तित स्थिति के क्या विशिष्ट कारण है और उनका प्रतिकार कैसे किया जाये।

कुछ विशिष्ट जानकारियां

- भारत के राष्ट्रपति भवन में सूर्य की किरणों से बिजली उत्पादन कर भवन के सभी हिस्सों को प्रकाशित करने की योजना प्रारंभ हो गई है।
- झारखंड में कई स्कूलों में सूर्य किरणों से बिजली उत्पादन प्रारंभ किया गया है। इससे वहां संध्या के बाद भी पठन पाठन चालू हुआ है।
- राजस्थान एवं अन्य प्रदेशों में जहां वर्षा ऋतु सीमित है वहां सूर्य किरणों से बिजली उत्पादन असीमित संभावनाएं उभर रही हैं।
- रूस के उत्तरी समुद्री तट पर कु समय पहले एक शत-प्रतिशत सफेद कबूतर आया था जिसे स्थानीय लोगों ने ईश्वरीय संज्ञा दी।
- एक सर्वेक्षण के अनुसार कोलकाता में ११ प्रतिशत व्यक्ति 'सीनियर-सीटिजन' हैं एवं सन् २०५० तक यह संख्या बढ़कर एक तिहाई हो जाएगी।
- राजस्थान में 'क्रुड आयल' के लगभग एक लाख गैलन उत्पादन होना प्रारंभ हो गया है जो भविष्य में काफी बढ़ने की उम्मीद है। वहां सोने की खान भी मिली है।
- राजस्थान में सर्व प्रथम राजपूतों में सामूहिक विवाह आयोजित हुआ और ७५ जोड़े पति-पत्नी बने।
- भारत के उत्तर पूर्वी हिस्सों में एक अनुमान के अनुसार इतना अधिक क्रुड आयल और गैस के उत्पादन की क्षमता आंकी गई है जो भारत की २०० वर्षों तक की आवश्यकता की पूर्ति कर सकती है।
- एक आई टी आई के छात्र को प्रारंभिक नौकरी रुपये ८१ लाख प्रतिवर्ष वेतन के आधार पर हुई है उसे हांककांग में नियुक्त किया गया है।
- ब्रिटिश एयरवेज को रोजाना खाद्य सामग्री के लगभग एक लाख पैकेट सप्लाई किये जाते हैं जिससे ब्रिटिश एयरवेज की हवाई सेवाओं के बिस्तार का अनुमान आंका जा सकता है।

युवाओं में उद्यमिता की भावना का विकास ही अस्तित्व रक्षा का उपाय

✍ मोहनलाल तुलस्यान

किसी भी समाज और राष्ट्र के लिए उसके युवाओं का सृजनशील सकारात्मक मानसिकता का पोषक, उद्यमी व समर्पित होना बहुत जरूरी होता है। मानव सभ्यता के विकास का इतिहास युवाओं की भूमिका के बिना अधूरी है। आज तक जितने भी निर्माण के कार्य हुए हैं और विध्वंश के भी सबमें युवाओं ने अहम् भूमिका निभाई है। युवा ऊर्जावान होता है। प्रकृति में भी ऊर्जा होती है। विज्ञान के वरदान से प्राकृतिक ऊर्जा को नियंत्रित करने एवं उसे दिशा देकर उपयोगी बनाने में काफी हद तक सफलता मिली है। अगर प्रकृति की ऊर्जा को यूं ही छोड़ दिया जाय तो वह दिग्भ्रमित होकर विनाश का तांडव रचा सकती है। ठीक यही स्थिति युवाओं की ऊर्जा के साथ है। यदि युवाओं की ऊर्जा में सठीक दिशा देकर उसे सृजन के कार्यों में लगाया जाय तो विकास का नया इतिहास निर्मित होता है जो किसी समाज और राष्ट्र की तकदीर बदल सकता है। लेकिन यदि इस ऊर्जा को छोड़ दिया जाय तो यह भी विनाश का सूचक हो जाता है। इसलिए ऊर्जा को नियंत्रित करने व उसे सही दिशा देने की जरूरत होती है। कवि रामधारी सिंह दिनकर की पंक्ति है :-

"लक्ष्मण रेखा के दास तटों तक ही जाकर फिर आते हैं। वर्जित समुद्र में नाव लिए स्वाधीन वीर ही जाते हैं।"

स्वाधीन वीर कौन हो सकता है ? युवा। युवा ही स्वाधीन भाव से विकास के नवपथ के अन्वेषक हो सकते हैं। इतिहास में ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं जिसमें युवाओं ने दुःस्साहसिकता का परिचय देकर इतिहास की धारा मोड़ दी। भारत के स्वतंत्रता संग्राम को ही लें। क्या युवाओं की एकजुटता, संग्रामी मानसिकता और राष्ट्रीयता की भावना के बिना स्वतंत्रता का लक्ष्य संभव था ? इसी तरह अगर मारवाड़ी समाज का इतिहास देखें तो पता चलेगा कि इस समाज को आज की तरह समृद्धवान, वैश्विक आधार वाला, व्यापारिक मानसिकता का बनाने में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वे युवा ही थे जिन्होंने रेतीली भूमि को छोड़कर पहली बार दिशावर को जाने का फैसला किया, सप्ताहों और महीनों तक की यात्रा का जोखिम उठाया और जीविका का संसाधन जुटाने के लिए असहनीय कष्ट सहे। रात-दिन एक करके व्यापार की नींव डाली और फिर उसमें दत्तचित्त होकर अपनी तकदीर बदली, औरों को भी जीविका का आधार दिया। मारवाड़ी समाज के युवाओं की कष्टसहिष्णुता, उद्यमिता और व्यावहारिकता अन्य समाजों के लिए ईर्ष्या का कारण रहा है। एक समय इन्हीं गुणों ने मारवाड़ी समाज को राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित किया था। उद्योगों के स्वामित्व में ८० प्रतिशत मारवाड़ी होते थे। तब न तो आज की तरह आधुनिक शिक्षा का चलन था और न ही समाज में इतना खुलापन था। जैसे-जैसे शिक्षा का प्रचार-प्रसार हुआ है समाज में खुलापन आया है, उद्योग व्यापार में वृद्धि की जगह एक ठहराव आता गया है और उसने मारवाड़ी समाज की आधारभूत संरचना को गहरे प्रभावित किया है। आज मारवाड़ी युवा 'रिस्क' लेना नहीं चाहते और इसीलिए वे व्यापार की जगह नौकरी को अहमियत देते हैं। कम्प्यूटर के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा के बूते मारवाड़ी युवाओं का एक बड़ा भाग विश्व की प्रतिष्ठित कम्प्यूटर कंपनियों पदों पर हैं, लेकिन जब बात इस उद्योग में निर्माण पर आती है तो निराश होना पड़ता है। इसी तरह नये-नये उद्योगों में मारवाड़ियों की भागीदारी घट रही है, क्योंकि रिस्क लेकर प्रतियोगिता के बाजार में धैर्य के साथ टिके रहने की मानसिकता घटती जा रही है।

एक और निराशाजनक माहौल यह बना है कि विगत वर्षों में उद्योग-व्यापार से परे मारवाड़ी युवाओं का एक हिस्सा धार्मिकता के रंग में रंगता जा रहा है। धार्मिक आयोजनों को नेतृत्व देना, धर्म से आय के स्रोत तलाशना और धार्मिक लोगों का पोषण करना युवाओं का मुख्य शगल हो गया है। मैं धर्मविरोधी नहीं, लेकिन धर्म में मत्त होकर अपनी पहचान खो देने की मानसिकता का विरोधी हूं। मारवाड़ियों ने सदा से धर्म में आस्था रखी है, धार्मिक लोगों को प्रोत्साहित किया है, धार्मिक स्थानों में धर्मशाला मंदिर आदि बनवाए हैं, लेकिन अपने उद्योग की कीमत पर नहीं। उद्योग का विकास उनकी प्राथमिकता थी।

मैं यह भी मानता हूं कि बिना उद्योग-व्यापार के मारवाड़ियों का अस्तित्व सुरक्षित नहीं रह सकता। इसलिए यह जरूरी है कि युवा पीढ़ी को उद्योगों की ओर प्रेरित किया जाय, उनमें खतरों से जूझने की जो प्रवृत्ति खत्म हो रही है उसको सुधारा जाए।

आजकल जब बिना परिश्रम के 'इजी मनी' कमाने की मनोवृत्ति युवाओं में बढ़ रही है और इसी में वे बर्बाद हो रहे हैं। उन्हें यह बताना जरूरी है कि परिश्रम का विकल्प नहीं है। यही वह चाभी है जो किस्मत का ताला खोलती है। उसे इस बात का भान कराय जाए कि

"शिकस्तें ही दिले नादां की दानाई सिखा देंगी, उसे पिघला के फिर ढालो, जो शीशा चूर हो जाए।"

टूट चुके शीशों को फिर से ढालने की कला ही विकास का सबब बन सकता है। सपने को साकार करने के लिए उद्यमिता को नये सिरे से परिभाषित करने की जरूरत है, और हमें ही यह कार्य नये संकल्प के साथ करना है।●

संयुक्त राष्ट्र के साठ वर्ष

✍ **सीताराम शर्मा,** उपाध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

आज, साठ वर्ष बाद, विश्व १९४५ की तुलना में यकीनन काफी बेहतर स्थिति में है, लेकिन संयुक्त राष्ट्र को कड़ी आलोचना का सामना करना पड़ रहा है। २००३ में इराक के प्रश्न पर सुरक्षा परिषद की असफलता ने तो संयुक्त राष्ट्र के औचित्य पर ही एक बड़ा प्रश्न चिह्न खड़ा कर दिया। विश्व के दो खेमों में बंट गया था। एक सर्वेक्षण के अनुसार संयुक्त राष्ट्र की विश्वसनीयता को धक्का दोनों खेमों में लगा था। अमेरिका एवं ब्रिटेन में जहां संयुक्त राष्ट्र के प्रति विश्वास में इसलिए कमी आयी क्योंकि संयुक्त राष्ट्र ने इराक युद्ध के प्रश्न पर उनका साथ नहीं दिया था, वही अन्य देश इसलिए संयुक्त राष्ट्र की इराक युद्ध को नहीं रोक पाने की असमर्थता से घोर निराश थे।

रास्ते में उलझनें

क्या संयुक्त राष्ट्र विश्व शान्ति के अपने उद्देश्यों में पूर्णत: असफल रहा है? क्या संयुक्त राष्ट्र विश्व की बेहतरी में जरा-सा भी कामयाब नहीं रहा है? ६० वर्ष का संयुक्त राष्ट्र क्या मृत-प्राय हो गया है या इसके रिटायर होने का समय आ गया है?

संयुक्त राष्ट्र संघ की ६०वीं वर्षगांठ पर सिटिजन्स पार्क से मैदान स्थित महात्मा गांधी की प्रतिमा तक 'वाक फॉर पीस' में भाग लेते वयोवृद्ध गांधीवादी डॉ. प्रताप चन्द्र चन्दर, प्रबोध चन्द्र सिन्हा, मो. सलीम, हाशिम अब्दुल हलीम, सीताराम शर्मा व अन्य। - (फोटो : विश्वमित्र)

विश्व के कोने-कोने से ये सवाल उठ रहे हैं।

संयुक्त राष्ट्र के महासचिव कोफी अन्नान ने शांति और सुरक्षा की नयी चुनौतियों एवं इराक में की जाने वाली कार्रवाई के बारे में आम राय बनाने की कोशिशें नाकाम रहने पर इस बात को स्वीकार किया कि ''संयुक्त राष्ट्र के रास्ते में उलझनें आ गई हैं।'' उन्होंने महासभा में एकत्र विश्व नेताओं से आग्रह किया कि वे मूल नीतिगत मुद्दों पर कड़ा रुख अपनाएं एवं चेतावनी दी कि इसकी अनदेखी करके हाथ पर हाथ धरे रहने से विश्व समुदाय की सामूहिक सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है।

नयी दुनिया : नयी चुनौतियां

१९४५ से २००५ के बीच दुनिया में एक बड़ा बदलाव आया है। यह एक नयी दुनिया है। संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों की संख्या ५१ से बढ़कर १९१ हो गई है। शीत युद्ध की समाप्ति एवं सोवियत संघ के बिखराव ने अमेरिका को विश्व का एकमात्र सबसे ताकतवर केन्द्र के रूप में स्थापित कर दिया है। विश्व के समक्ष कुछ ऐसी नई एवं विषम चुनौतियां उभर कर आयी है जो १९४५ में संयुक्त राष्ट्र की स्थापना के समय ज्ञात नहीं थी। इनमें से कुछ चुनौतियां- बढ़ती आतंकवादी गतिविधियां, जैविक और रासायनिक जहरों का हथियार के रूप में इस्तेमाल और गैर सरकारी तत्वों द्वारा परमाणु हथियारों का प्रसार-हाल के वर्षों में काफी हावी रही है जिससे विश्व की सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था में उलझाव आ गया है।

शान्ति स्थापना आयोग

तथ्य एवं आंकड़ों से स्पष्ट है कि युद्ध की स्थिति से उबरने वाले लगभग आधे देशों में पांच साल के भीतर फिर से हिंसा शुरू हो जाती है। इससे बचने के लिए युद्धों को रोकना या समाप्त करना ही पर्याप्त नहीं है, शान्ति स्थापित करना भी आवश्यक है। शांति स्थापना में संयुक्त राष्ट्र की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसका भरपूर लाभ उठाने के लिए सदस्य देश एक शांति स्थापना आयोग बनाने पर चर्चा कर रहे हैं। पिछले १५ वर्षों में बातचीत के जरिये जितने गृहयुद्ध समाप्त हुए हैं उतने इससे पहले दो-सौ वर्षों में भी नहीं हुए।

आतंकवाद : सर्वमान्य परिभाषा

अनेक सदस्य देशों का मानना है कि व्यापक आतंकवाद विरोधी कन्वेन्शन तथा आतंकवाद की सर्वमान्य परिभाषा पर

सदस्य देशों के बीच सहमति न हो पाने के कारण आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में संयुक्त राष्ट्र का नैतिक बल घटता जा रहा है। वर्तमान अधिवेशन में उच्चस्तरीय पैनल ने इस परिभाषा का सुझाव दिया है - ''असैनिकों या लड़ाई में हिस्सा न लेने वालों को मारने या उन्हें गंभीर शारीरिक क्षति पहुंचाने के इरादे से की गई कोई भी कार्रवाई, जहां इस कार्रवाई का उद्देश्य लोगों के एक समूह को आतंकित करना या किसी सरकार अथवा किसी अंतर्राष्ट्रीय संगठन को कुछ ऐसा करने या न करने के लिए मजबूर करना जिसे किसी भी आधार पर उचित न ठहराया जा सके आतंकवादी कार्रवाई मानी जाएगी।''

सुरक्षा परिषद का पुनर्गठन

नि:संदेह संयुक्त राष्ट्र विश्व शान्ति बनाये रखने में पूर्णतया कामयाब नहीं रहा है। हालांकि तीसरा विश्व युद्ध नहीं हुआ, लेकिन राष्ट्रसंघ की स्थापना के पहले ५० वर्षों में १०० से अधिक बड़ी लड़ाइयां विश्व में हुई जिनमें २ करोड़ लोगों की जाने गईं। शीत युद्ध के चलते पहले ४० वर्षों में सुरक्षा परिषद में करीबन २८० दफा वीटो का उपयोग कर संयुक्त राष्ट्र को नि:सहाय बना दिया गया था। अब दुनिया बदल गई है, अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर नये समीकरण उभरे हैं। सुरक्षा परिषद् २१वीं शताब्दी में एक नई ताकत के साथ उभर कर सामने आयी है जिसके पांच स्थायी सदस्य- चीन, फ्रांस, रूस, ब्रिटेन एवं अमेरिका वीटो अधिकार के चलते अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में असाधारण ताकत के मालिक हैं। ज्ञात रहे सुरक्षा परिषद, संयुक्त राष्ट्र का एकमात्र अंग है जिसके निर्णय राष्ट्रों पर बाधित है।

सुरक्षा परिषद के गठन में परिवर्तन की तुरन्त आवश्यकता है, क्योंकि इसका वर्तमान स्वरूप आज के अंतर्राष्ट्रीय यथार्थ का द्योतक नहीं है। कई देशों का मानना है कि सुरआ परिषद का इस्तेमाल कुछ ताकतवर देशों के 'हितों' के लिए किया जा रहा है। साथ ही पांच स्थायी देश न तो भौगोलिक वितरण के आधार पर और न ही वर्तमान आर्थिक अथवा सैनिक ताकत के आधार पर अपना औचित्य स्थापित कर पाते हैं।

परिषद के पुनर्गठन के हामी देशों का तर्क है कि स्थायी देशों की श्रेणी में भौगोलिक आधार पर अफ्रीकी एवं लेटिन अमेरिका का प्रतिनिधित्व बनता है, साथ ही एशिया का प्रतिनिधित्व केवल चीन नहीं कर सकता। सयुक्त राष्ट्र के लिए अपने आर्थिक योगदान के आधार पर जापान एवं जर्मनी ने सुरक्षा परिषद् में अपनी स्थायी सदस्यता का दावा पेश किया है। भारत ने जनसंख्या, सैन्य शक्ति, बढ़ती आर्थिक ताकत, लोकतंत्र एवं राष्ट्रसंघ के प्रति निष्ठा के आधार पर अपनी सदस्यता के लिए बड़ा समर्थन प्राप्त किया है। इस बात की बड़ी उम्मीद थी कि संयुक्त राष्ट्र के ६०वें वर्ष में इस महत्वपूर्ण विषय पर कोई सैद्धांतिक निर्णय अवश्य लिया जा सकेगा। अब यह संभव नहीं लग रहा है।

सहस्राब्दी विकास लक्ष्य : दिवास्वप्न नहीं

विश्वव्यापी गरीबी की चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए सहस्राब्दी विकास लक्ष्य राष्ट्रसंघ ने तय किये हैं। पहली बार धनी देशों ने माना है कि गरीब देशों द्वारा किये जाने वाले प्रयासों में सहायता देना उनकी भी जिम्मेदारी है। सहस्राब्दी विकास लक्ष्य न सिर्फ महत्वपूर्ण है, बल्कि साथ ही तकनीकी तौर पर व्यावहारिक भी है एवं प्राप्त किये जा सकते हैं। ये मात्र दिवास्वप्न नहीं है।

पहले लक्ष्य की ही चर्चा करें - यानी बेहद गरीबी को घटाकर आधे तक ले आना। गत १५ वर्षों में अनेक देशों ने गरीबी का परिमाप घटाने में जबर्दस्त कामयाबी मिली है और सबसे ज्यादा सफलता एशियाई देशों ने प्राप्त की है। १९९० के बाद से निहायत गरीबी की हालत में गुजर-बसर करने वाले लोगों की संख्या में २५ करोड़ से भी ज्यादा की कमी आयी है। लेकिन एशिया में करीब ७० करोड़ लोग आज भी एक डालर से कम की दिहाड़ी में गुजारा कर रहे हैं। कुल मिलाकर लगभग एक अरब लोग, यानी विकासशील देशों की आबादी के पांच लोगों में से एक आज भी निहायत गरीबी की हालत में रह रहे हैं।

व्यापक एजेण्डा

विकास, सुरक्षा और मानवाधिकार अपने आप में लक्ष्य नहीं हैं - ये एक दूसरे को सशक्त बनाते हैं तथा एक दूसरे पर निर्भर भी हैं। हमारे आपस में जुड़े हुए विश्व में मनुष्य को सुरक्षा के बिना विकास का लाभ नहीं मिल पाएगा, साथ ही, यह भी कि विकास के बिना सुरक्षा का भी आनंद नहीं उठा पाएगा और फिर सबसे ज्यादा बढ़कर यह कि मानवाधिकारों की स्थापना किये बिना मनुष्य को सुरक्षा या विकास किसी का भीलाभ नहीं मिलेगा।

हमें सामूहिक सुरक्षा को सुदृढ़ करने के लिए फैसले करने हैं, हमें गरीबी, बीमारी और निरक्षरता के खिलाफ लड़ाई में असली प्रगति प्राप्त करनी है। यह तभी संभव है जब विश्व सभी सहस्राब्दी विकास लक्ष्ययों को प्राप्त करने के साधन उपलब्ध करा दे, यदि सरकारें मानवाधिकारों का महत्व समझ ले और संयुक्त राष्ट्र का पुनर्गठन किया जाये ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वह अपना काम बखूबी निभाएगा। इसकी सफलता-असफलता हमारे हाथ में है। हालांकि संयुक्त राष्ट्र सरकारों की संस्था है, लेकिन इसकी असली ताकत विश्व की जनता है। जब तक विश्व के आम आदमी को इस संस्था में विश्वास रहेगा तब तक ही इसका अस्तित्व बना रहेगा। संयुक्त राष्ट्र चार्टर के पहले शब्द है ''वी द पीपुल्स''। संयुक्त राष्ट्र के विषय में कई भ्रांतियां हैं- यह कोई 'सुपर सरकार' नहीं है, संयुक्त राष्ट्र वही कर सकता है जो सरकारें चाहें और गणतांत्रिक व्यवस्था में केवल जनता अपनी सरकारों को सही निर्णय में संयुक्त राष्ट्र के समर्थन के लिए बाध्य कर सकती है। महासचिव कोफी अन्नान ने सही कहा है - ''एक समय में संयुक्त राष्ट्र केवल सरकारों के माध्यम से कार्य करता था, लेनि अब हम जान गये हैं कि संयुक्त राष्ट्र की सरकारों, अंतराष्ट्रीय गैर-सरकारी संस्थाओं, व्यावसायिक समुदाय एवं समाज के साथ साझेदारी के बिना विश्व शांति एवं विकास संभव नहीं है। आज की दुनिया में हम एक दूसरे पर निर्भर हैं।''●

"औड़ौ आवै मिनखरै, सुख-दुःख बारहूं मास कर दिवलारी आती, घर-घर करै उंजास"

✍ भानीराम सुरेका, राष्ट्रीय महामंत्री, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

आप सभी को दीपावली की शुभकामनाएं। यह उल्लास, उत्साह व उमंग का त्यौहार है, सुख-शांति और स्नेह का प्रतीक है। आपके जीवन को हर्ष व आनंद से भर देवे। वैसे तो बंगाल त्यौहारों का प्रान्त है, अभी-अभी दुर्गापूजा, लक्ष्मी पूजा गई है। यहां त्यौहार अंधकार पर उजाले, असत्य पर सत्य की और बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक माना जाता है। किन्तु पारम्परिक डांडिया-गरबे के इस त्यौहार पर आधुनिकता का असर इतना गहरा हो गया है कि पंडालों में भजन कीर्तन और ढाकी की मधुर आवाज की जगह फिल्मी भौंड़े गाने और पॉप संगीत की धुने सुनाई देती है। बिजली से चलने वाले वाद्य यंत्रों के बीच पुराने गीत व भजनों को सुनने वालों की संख्या में कमी आई है। आधुनिकता की इस दौड़ में हमलोग अपनी पुरखों की परम्परा को भूले जा रहे हैं। भारत की गरिमा उसकी सभ्यता, संस्कृति और रीति-रिवाज इन त्यौहारों से प्रकट होती है। पारम्परिक शैली में खेले जाने वाले गरबे-डांडिये की बात कुछ और होती थी। देवी गरबा की पूजा होती थी, किन्तु आजकल पूरा तरीका बदल गया है, कब डिस्को का रूप ले लेता है, पता नहीं चलता। डांडिया पर यह चढ़ा पाश्चात्य सभ्यता के रंग को बदलना होगा।

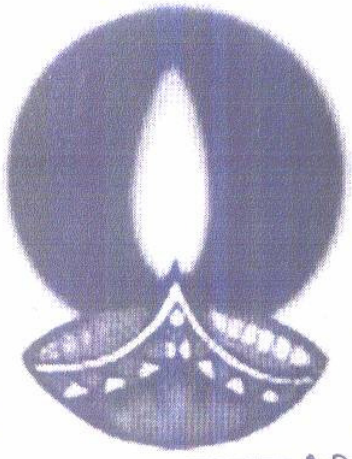

यह दीपपर्व, समृद्धि का पर्व है, यह महापर्व पूरे संसार में बड़े धूमधाम तथा हर्षोल्लास से मनाया जाता है। दीपावली के आगमन के पहले से ही घर-आंगन, चौबारे और जो घर बंद है, उसकी भी सफाई होने लगती है। दीपावली पर तरह-तरह की रंगोली, मांडना, चौका पूरना व रंग रोगन से सजाने की प्रथा अपने देश में बहुत ही पुरानी प्रथा है। यह शुभत्व का प्रतीक तो है, साथ में कीड़े मकोड़ों के जाले भी नष्ट हो जाते हैं। पूजा-पाठ एवं घर सजाने से हृदय में कल्याणकारी भावनाएं पैदा होती हैं तथा उत्सव का वातावरण निर्मित होता है। इस अवसर पर तरह-तरह के पकवान बनाए जाते हैं, कपड़े नये बनाये जाते हैं, किन्तु एक कटुसत्य है कि पटाखे और आतिशबाजी से न केवल पर्यावरण बल्कि हमारे सभी के स्वास्थ्य भी बुरी तरह से प्रभावित होता है। यह धन के अपव्यय व दुर्घटनाओं के लिए अधिक प्रसिद्ध है। आज के जमाने में इस त्यौहार को सबसे अधिक विकृत किया है, आतिशबाजी ने। शहरों में जहां वातावरण पहले से ही प्रदूषित रहता है, हमेशा देर रात तक शोर शराबे में रहना पड़ता है। दीवाली पर्व पर छोड़े जाने वाले पटाखों व फुलझड़ियों से निकलने वाली जहरीली गैसों व धमाकों की आवाज के कारण पर्यावरण के साथ-साथ बच्चों के शरीर पर दूरगामी असर पड़ता है, खास कर आंखों पर। आप सबसे मेरा निवेदन है कि आतिशबाजी को मात्र वैभव प्रदर्शन का प्रतीप बनाना उचित नहीं, क्योंकि इससे आज अन्य लोगों में ईर्ष्या व विद्वेष की स्थिति बढ़ रही है। इस तड़क-भड़क की चकाचौंध ने दीपों के उज्वल प्रकाश को धूमिल किया है, जो दीपावली जैसे मांगलिक पर्व का प्रतीक रहा है। इस पर सभी चिंतन-मनन अवश्य करें।

मारवाड़ियों में दीप पर्व के प्रति विशेष अनुराग व शुभ मानते हैं। अमावस्या की अंधेरी रात में ढेर सारे दीप जलाकर सुख-समृद्धि की मां लक्ष्मीजी का पूजन बड़ी धूमधाम से सभी करते हैं। सब लोग अपनी दुकान-घर खोलकर लक्ष्मीजी के आने की इच्छा रखते हैं। सभी लोग धन की इच्छा रखते हैं और रखनी भी चाहिए, क्योंकि आज के जमाने में धन बिना सब सून है। **चाणक्य ने भी कहा था कि "जिसके पास धन होता है, उसी के बहुत से मित्र होते हैं, बंधु-बांधव होते हैं, वही पुरुष कहलाता है, और वही जीवित होता है। पंचतंत्र में भी स्पष्ट संदेश है कि धन का प्रभाव है कि अपूजनीय भी पूजनीय हो जाता है, अगमनीय भी गमनीय और अवंदनीय भी वंदनीय हो जाता है।** प्रियम्बदा बिड़ला की ५००० करोड़ रुपये की धन संपत्ति की प्रधानता ने समस्त समाज को उलट-पलट कर दिया है। विधाता भाग्य की स्वर्णिम रेखा खींचकर किसी को भी धनवान बना देता है। **विद्वान कहते हैं कि धन या तो अपने स्वामी की सेवा करता है या उस पर शासन। महाराजा भतृहरि ने कहा है कि भोग, सौंदर्य, नीति और वैराग्य की व्यख्या करते हुए बताया कि धन की तीन गतियां हैं- दान, भोग और नाश। जो मनुष्य न ही दान देता है और न ही भोगता है, उसका धन नाश हो जाता है।**

आइये हर्ष उल्लास से हिन्दू नव वर्ष मनायें, दीपक चलायें, मोमबत्तियां न बुझायें। अपनी ताकत को पहचाने और बढ़ाये।

'हममें तुममें है फर्क यही
हम नर हैं तुम नारायण हो,
हम संसार के हाथों में,
और संसार तुम्हारे हाथों में।

उचित नहीं है परम्पराओं का ढोल पीटना !

✍ हीरालाल सोमानी, नई दिल्ली

सामाजिक परिवेश में बहुत बड़ा बदलाव आया है और ऐसा बदलाव, जिसे हर हाल में स्वीकार करना होगा। जो लोग इस परिवर्तन को नहीं अपनाएंगे, उन्हें पछताना पड़ सकता है। पुरानी बातों को याद करना, पुरानी परम्पराओं और अनुभवों से सीख लेना तथा पुराने रीति-रिवाज व संस्कृतियों के सकारात्मक पक्ष पर अमल करना अच्छी बात है। ऐसा होना चाहिए लेकिन सिर्फ इसलिए किसी परम्परा को ढोना, क्योंकि वह पुरानी है, मेरी समझ की बात नहीं है। दरअसल खुली अर्थव्यवस्था और वैश्वीकरण के इस दौर में सामाजिक व्यवस्थाएं आज हमारे सामने एक नई शक्ल में मौजूद हैं। हम आज ऐसे समाज में जी रहे हैं, जहां नित नए बदलाव आ रहे हैं। अब सवाल यह उठता है कि क्या हम जमाने के विपरीत चलेंगे ? क्या जमाने के विपरीत दिशा में चलकर टिक सकेंगे ? ऐसा कभी नहीं हो सकता। हमें भूत, भविष्य और वर्तमान के बीच तालमेल रखना होगा। भूतकाल की अच्छी परम्पराओं और उन परम्पराओं में अंतरनिहित गुणों को वर्तमान व्यवस्था के अनुरूप ढाल कर चलना होगा। लेकिन परम्पराओं का ढोल पीटना छोड़ना होगा और रूढ़िवादिता का पूरी तरह से परित्याग कर देना होगा।

कइ सामाजिक परम्पराएं टूट चुकी हैं, कुछ टूट रही हैं और यह सिलसिला आगे भी जारी रहेगा। कुछ टूटता है तो कुछ जुड़ता है। इसी को बदलाव कहते हैं। प्रकृति भी बदलती है। सुबह के बाद शाम होती है। रात होती है तो फिर दिन होता है। इस तरह से परिवर्तन प्रकृति के निरंतर चलने वाली एक सहज प्रक्रिया है। इसे झुठलाया नहीं जा सकता है। आने वाले समय में समूची सामाजिक व्यवस्था बदल जाएगी। लोग पूरी दुनिया को ही अपना वतन समझने लगेंगे। संचार की क्रांति ने आज ही पूरे विश्व को एक छोटे से गांव में तब्दील कर दिया है। देखते रहिए इसके बाद और क्या होता है।

समाज में जात-पात, धर्म और मजहब की सीमाएं टूटेंगी। अंतर्जातीय विवाह धड़ल्ले से होंगे। कोई नहीं रोक पाएगा। एक ऐसा भी समय आएगा, जबकि लोग अपने बच्चों को पढ़ा-लिखाकर २५ साल की उम्र में कह देंगे कि अब अपना भविष्य खुद देखो। बच्चों को अपनी मर्जी से काम करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। जिम्मेदारी देनी चाहिए और साथ में स्वतंत्रता भी। ताकि वह खुद अपना भविष्य चुन सकें और स्वावलंबी बन सकें। ईमानदार वह होता है जिसके पेट में भूख होती है या फिर संस्कारवान तथा एक समृद्ध परम्परा पर चलने वाला होता है। सभी ईमानदार कभी नहीं हो सकते। सन् १९४० के बाद 'चीप मनी पालिसी' शुरू हो गई, जिसके तहत लोगों के पास काफी पैसा आ गया और पैसा आते ही मोह माया का ऐसा जाल तैयार हो गया, जिसमें सभी फंसते चले गए।

जो कुछ भी मनोमालिन्य पैदा होता है, वह सब पति-पत्नी के बीच का ही मामला रहता है क्योंकि बदली हुई परिस्थितियों में आज की बहुएं सास की भूमिका में है और सास बहू बनकर रह रही है। इस तरह से सास-बहू के बीच होने वाले कथित झगड़ों का दौर अब खत्म हो गया है। आज की महिलाएं पढ़ी-लिखी हैं। 'दुनियादारी' से भलीभांति वाकिफ हैं। इसलिए किसी तरह के दबाव में नहीं आती हैं। बड़े घरों के लड़कों का अपना एक अलग समाज होता है। शुरू से ही स्वच्छंद विचारधारा के होते हैं। उनकी स्वच्छंदता पर जैसे ही महिलाएं अंकुश लगाने की चेष्टा करती हैं, वैसे ही मनमुटाव का बीजारोपण हो जाता है।
(साभार विश्वमित्र)

बांधना चाहा मन को

बस, एसे ही एक शाम
सूर्यास्त के क्षण भर बाद
मैंने बादलों में छुप जाना चाहा
विचारों की मधुरिमा से ओत-प्रोत हो
मैंने कोहरा हो जाना चाहा।
जीवन के हर क्षण की स्मृतियों को घेरकर,
संवेदनाओं को सहेजकर,
वेदनाओं को कुरेदकर
मैंने मन को बांधना चाहा।
मेरे भावों को अभिव्यक्ति मिल जाए, इसलिए
मैंने मौन को शब्दों में ढालना चाहा
मन में बसती, मन में सजती अभिलाषाओं को
एक नया आकार देना चाही।
मन के आंगन में फलता-फूलता
मेरे सपनों का अंकुर
रोज की तरह आज भी मैंने उसे
भीगी यादों से सींचना चाहा।
लेकिन- न जाना मैंने कभी...
बहुत कठिन है मौन को मुखर करना...
बहुत कठिन है मन को बांधन।...

- कोमल अग्रवाल, जूनागढ़
सचिव, मारवाड़ी महिला समिति

आपका व्यक्तित्व आपका अस्तित्व

✍ अनिता अग्रवाल

आज के इस आधुनिक और स्पर्धा भरे युग में हर कोई अपनी एक अलग पहचान बनाना चाहता है। प्रत्येक व्यक्ति में गुरों का समावेश अवश्य होता है जरूरत होती उसके विकास की और इस कार्य को अंजाम देता है आपका सुदृढ़ और निखरा व्यक्तित्व। व्यक्तित्व का शाब्दिक अर्थ होता है- व्यक्ति+तत्व। तत्व से तात्पर्य है अच्छे गुणों का समावेश।

अच्छे गुण हैं - सौम्यता, सरलता, सहिष्णुता, दया, क्षमा, सौहार्द इत्यादि। यूं तो व्यक्तित्व अंग्रेजी के PERSONALITY का हिन्दी रूपान्तर है, जो इटालियन भाषा के PERSONAL का अर्थ है- मुखौटा। यहां मुखौटे से तात्पर्य है कि दुनिया एक रंगमंच है और जिंदगी एक अभिनय। मनुष्य उस अभिनय का एक पात्र है। एक अच्छा और सफल अभिनेता वही होता है जो अपनी भूमिका जीवंत रूप से अदा करता है।

जिसका किरदार जितना सार्थक होगा, उसका व्यक्तित्व भी उतना ही निखरा होगा। व्यक्तित्व की सार्थकता की सबसे बड़ी कुंजी है - आत्मविश्वास। हमेशा यह महसूस करो कि तुम दुनिया के सबसे अहम् और अनमोल व्यक्ति हो। हमेशा आशावादी बनना व्यक्तित्व की सफलता का दूसरा सोपान है।

यदि इतिहास के पृष्ठों को पलटा जाय तो पता चलता है कि जितनी भी महान हस्तियां हुई हैं उन्होंने अपनी सकारात्मक सोच के कारण ही सफलता और ख्याति की बुलंदियों को चूमा है। दैवी सम्पदा के गुणों को अपने आत्मसात करके मनुष्य एक सफल व्यक्तित्व का स्वामी बन सकता है।

कुछ लोग अच्छे चेहरे-मोहरे और सलीके से सजधज कर रहने को अच्छा व्यक्तित्व मानते हैं और इसे भाग्य की देन मानते हैं। मगर यह तो साफ अपने अवगुणों को छिपाने का एक बहाना मात्र है। भाग्य तो कर्म का दास है।

कर्म रूपी फुटबॉल पर जिसकी पकड़ जितनी मजबूत होगी, जिंदगी रूपी किक भी उतनी ही तेज लगेगी। नेपोलियन बेनापार्ट एक बार कहीं जा रहे थे। एक जगह काफी भीड़ देखकर रुके तो पता चला कि एक ज्योतिषी सबकी भाग्य-रेखा परख रहा था। जिज्ञासावश नेपोलियन ने भी अपनी हथेली उनके सामने कर दी। ज्योतिषी ने उनका हाथ देखकर बताया कि उनके हाथ में तो भाग्य-रेखा है ही नहीं। इस पर नेपोलियन ने चाकू निकाला और अपने हाथ पर एक लम्बी रेखा चीरकर कहा- ''यह है मेरी भाग्य-रेखा।'' तात्पर्य यह है कि मनुष्य अपने भाग्य का विधाता स्वयं है। अगर यूं कहा जाए कि कर्म व्यक्तित्व का एक और पहलू है तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी।

अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में हमेशा सम रहना अच्छे व्यक्तित्व का प्रमाण है। अच्छे व्यक्तित्व वाले मनुष्य जटिल से जटिल परिस्थितियों में भी घबराते नहीं है। उनका मुख मण्डल आत्मविश्वास और प्रसन्नता के तेज से दमकता रहता है। व्यक्तित्व का सबसे बड़ा दोष है - अहंकार। यह मन और व्यक्तित्व का सूतक है। चन्द्रमा और सूर्य ग्रहण का सूतक तो कुछ घण्टों में शुद्ध हो जाता है, मगर अहंकार रूपी ग्रहण का सूतक मनुष्य को पतन की चरम सीमा पर लाकर पटक देता है जिससे मनुष्य का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। इसलिए यदि....

बनाना चाहते हो अपना अस्तित्व।
तो निर्माण करो, एक सुदृढ़ व्यक्तित्व।।●

★ सौंदर्य में नारी अभिमानी बनती है। उत्तम गुणों से उसकी प्रशंसा होती है। और लज्जाशील होकर वह देवी बन जाती है। (शेक्सपीयर)

★ नारी सबकुछ कर सकती है लेकिन अपनी इच्छा के विरुद्ध प्रेम नहीं कर सकती। (सुदर्शन)

★ नारी को पराजित करना है तो उसकी प्रशंसा करो। (वृन्दावन लाल वर्मा)

★ सुन्दर नारी या तो मूर्ख होती है या अभिमानी। (स्पेनी कहावत)

★ नारी सब कुछ सह सकती है। दारूण से दारूण दुःख, बड़े से बड़ा संकट। यदि नहीं सह सकती तो अपने यौवन काल की उमंगों का कुचला जाना। (प्रेमचंद)

सुराज

किंवदन्ती है -
युगों पहले, इस धरती पर
'मनुष्यों' का सुराज था।
ढूंढने पर, आज भी
अवशेष मिलते हैं
पर, बंटे हुए, विभाजित।
क्योंकि-
मनुष्यता के दंगों में
मनुष्य का विभाजन हो गया
और वह,
'पुरुष' तथा 'स्त्री'
दो भागों में बंट गया।
पूरी पृथ्वी पर
'पुरुष' की 'ताकत' का
विस्तार हो गया, और
'स्त्री' पर सुराज।

- देवी चितलांगिया

स्वप्नों के सौदागर की - सोनेरी पांखावाली तितलियां

✍ बंशीलाल बाहेती, महामंत्री, लघु उद्योग महासंघ

एक बार बचपन में नानी ने एक सोनपरी की कहानी कही थी और उस कहानी का सिलसिला तब तक चलता रहा जब तक एक बेहद खूबसूरत-गर्वित और साहसी राजकुमार सीधे स्वर्ग लोक से उतर कर सोने की पांखों वाली राजकुमारी के पास नहीं आया। राजकुमार को देखकर राजकुमारी की खुशियों की कोई सीमा नहीं रही- दोनों एक दूसरे पर मोहित हो जाए और सदा के लिए वे एक दूसरे के बन जाए। भाई माधव नागद की सोनेरी पांखा वाली तितलियों का लेखन तब तक चलता रहे जब तक ऐसा करना उनके लिए संभव हो। भाई सीतारामजी शर्मा ने कुछ अर्से पहले मुझे यह पुस्तक देते हुए कहा कि मैं इसके बावत अपने विचारों को अभिव्यक्ति दूं। पता नहीं मैं इस भावात्मक और प्रेरणाप्रद लेखन के बावत अपनी बात सही ढंग से कह पाया हूं या नहीं परन्तु यह सही है जो भी प्रबुद्ध पाठक इसे पढ़ेगा उसे इसकी सार्थकता और सत्य से प्रेरणा मिलेगी और लेखक के प्रति हमारे मन में आदर बढ़ेगा।

कहा जाता है कि कल्पना के अपने पंख होते हैं और जो स्वप्नों के सौदागर होते हैं वे ऐसे ही पंखों की तिजारत करते हैं। वे विसायति की तरह आकाश-पाताल और धरती के हर कोने में पूरी परख और लगन के साथ इन पंखों का चयन करते हैं और फिर अनमोल दामों में उसे प्राप्त करने वालों का हजूम उमड़ पड़ता है।

श्री माधव नागदा की 'सोनेरी पांखावाली तितलियां' महज एक डायरी ही नहीं है वह एक पारखी की मानवीय संस्कारों और संवेदनाओं का गहन अध्ययन और निराली खोज है। घटनाओं का संकलन इसका प्रमाण है। पुस्तक का हर पृष्ठ और उसमें वर्णित हर विगत के जीवन की सच्चाई और फिर जीने की एक ललक का ऐसा विवरण है कि आप समाज में व्याप्त दु:ख-दर्द एवं पीड़ा के माहौल में भी अपने आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान को नया आयाम दे सकते हैं।

सामयिक घटनाओं का विवरण इतना सटीक और कार्मिक है कि आप उनके महत्व को भुला नहीं सकते। पूरे विश्व के घटनाक्रम का सार प्रस्तुत करते हुए अपने देश की प्रमुख एवं प्रसांगिक परिस्थितियों का इस खूबी से विवरण किया है कि लगता है १९७९ से २००० तक का पूरा इतिहास जीवित हो गया है। लेखक ने अपने इर्द-गिर्द की घटनाओं, निजी रिश्तों एवं सामाजिक परिवेश को इतनी गहराई एवं इमानदारी से दर्शाया है कि जीवन की समग्रता को समझने का, अहसास करने का और फिर स्वयं को उसी समग्रता में जीने की एक नई प्रेरणा मिलती है। यह सास्वत सत्य है कि एकांकी जीवन मानव मूल्यों की परख कभी नहीं हुई। आपके इर्द-गिर्द घटनाक्रम उस समय काल में घटित राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्थितियों और परिस्थितियों से आप भी प्रभावित होंगे और वह पूरा समाज और व्यवस्था भी तब उस प्रभाव से प्रभावित होगी जिसके आप अभिन्न अंग हैं। आपकी चेतना, चिंतन और पुरुषार्थ तब आपको अधिक सार्थक और समर्थ बनाने में सहायक होगा और एक बार जब आप समग्रता में जीने का महत्व समझेंगे तभी सामाजिक क्रांतियों की पहल होगी और तभी कोई बुद्ध, महावीर, नानक साहब, महात्मा गांधी या जननायक उभर कर सामने आएंगे। शांत झील में एक छोटा कंकण फेंकिए और आप देखेंगे कि पूरा पानी झकोले खाने लगता है। व्यक्ति की शक्ति कितनी ही सीमित क्यों न हो पर जब वह सत्य के लिए संघर्ष की पहल करता है तो वह असीम बन जाता है और तभी युग पुरुष की अवधारणा को मूर्त रूप मिलता है। आवाज कितनी भी कमजोर हो और प्रयास कितना भी सीमित हो यदि पहल की जावे तो सारा आयाम बदल जाता है - इसीलिए दुष्यन्त कुमार ने कहा है-

''होने लगी है जिस्म में जुम्बिस तो देखिए,
इस परकटे परिन्दे की कोशिश तो देखिए।''

यह क्रांति की पवित्रता और उसकी सार्थकता को गरिमामय करने का एक इमानदार प्रयास और प्रेरणा है। समाज का हर वह व्यक्ति जिसे हमने हासिए पर ढकेल दिया है, वह भी जीवन की सबसे बड़ी क्रांति का प्रेरणा पुरुष बन सकता है। डायरी के शुरू के प्रसंग में ही आप महान् शूरवीरों की धरती मेवाड़ की परम्पराओं और पराक्रम की पावनता का बोध कर निहाल हो जाते हैं, लगता है रणभूमि में पूरे आत्मबल से पत्ता जूझ रहा है, दूसरी तरफ जगमग तोपों की बरसात के बीच कितनी तन्मयता से परकोटे व राजमहल की मरम्मत में अपनों को प्रेरणा दे रहा है। चूण्डावत का प्रसंग आपको अपने पुरखों के बलिदान और शार्य की यादों को ताजा करता है एवं मेवाड़ की गौरवमय धरती के सपूतों की रगों में दौड़ते खून और हाड़ी राणी की अमर गाथा की स्मृति हमें अपनों के जीवन की सार्थकता का अहसास कराने को प्रेरित करती है।

अपने डायरी के शुरूआती वर्ष में लेखक ने जिस भावात्मकता से श्री जयप्रकाश नारायण के प्रयासों से जमी जनता सरकार के उद्‌भव और फिर पतन का जो उल्लेख किया है वह बेहद वेदनामय है। अपनों के विश्वासघात का ऐसा चित्रण कि हमारी पूरी संस्कृति और सभ्यता को बार-बार शर्मिन्दा होना पड़े उसे इतिहास कभी भूल नहीं पाएगा।

कितने ही प्रसंग ऐसे हैं कि व्यक्ति पीड़ा की पराकाष्ठा झेलते हुए जो गम बर्दाश्त करता है उसे व्यक्त भी नहीं कर सकता महज अहसास कर सकता है और इसीलिए लेखक ठीक ही कहता है कि गम की कोई भाषा नहीं होती। अभावों और अस्वस्थता से जूझती मां अपने पुत्र के भविष्य के लिए क्या नहीं करती और बार-बार कामना करती है कि उसका बेटा महान् बने- उच्च शिक्षा प्राप्त करे एवं संस्कारों को संजोते हुए लोगों के लिए आदर्श बने।

शायद किसी मां का इससे बड़ा त्याग और तपस्या और क्या होगी। ऐसी माताएं सबकी पूजनीय बन जाती है और वे ही समाज की श्रद्धा की पात्र बनती है।

राष्ट्रीय संदर्भ में उन्हीं दिनों आरक्षण से उपजी घिनौनी राजनीति से आगाह करने की जरूरत महसूस करता लेखक कहता है कि एक दिन इस देश में गृह युद्ध जैसी स्थिति उभरने का खतरा हो सकता है। उसकी अशंका है कि आरक्षण के नाम पर फूट डालने का यह एक सुनियोजित षड़यंत्र है और उससे हमारे जनतंत्र की पवित्रता को तेजी से भ्रष्ट करने का अवसर मिलेगा।

वर्तमान व्यवस्था का एक प्रसंग ऐसा ही है कि आप और हम अपनी विवशता पर लज्जित हुए बिना नहीं रह सकते हैं। एक बैंक के अधिकारी ने घटना का विवरण देते हुए बताया कि उनकी बैंक ग्रामीणों को विकास के लिए ऋण प्रदान करती है उसी क्रम में क्षेत्र के एक राजनेता ने एक आदिवासी नौकर के लिए ऋण दिलवाया - उस ऋण पर समाज कल्याण विभाग अपनी तरफ से पांच सौ रुपये की छूट देता है- ऋण एक भैंस खरीदने के लिए मंजूर करवाया। ग्रामीण को बैंक ने ऋण दे दिया। परन्तु जब बैंक के अधिकारी उस ग्रामीण नौकर के यहां भैंस देखने को गये तो मालूम पड़ा कि भैंस व समाज कल्याण द्वारा प्रदत्त पांच सौ की छूट भी की राशि तो स्वयं राजनेताजी खुद ही हड़प गए हैं। जब ऐसी घटनाओं को उजागर करती एक फिल्म - 'मेरीआवाज सुनो' सामने आयी तो हमारे राजनेताओं ने उस फिल्म को ही प्रतिबंधित करवा दिया। यह कोई बड़ी राष्ट्रीय घटना नहीं है किन्तु हमारे नैतिक मूल्यों के पतन की पराकाष्ठा है। अब तो न हमें ईश्वर का भय है न समाज और व्यवस्था का। कौन इस स्थिति से हमें निजात दिलाएगा ? कुछ लोगों के दंभ, अहम् और स्वार्थ ने पूरी व्यवस्था को पंगु बना दिया है। इतिहास साक्षी है कि ऐसे लोगों का पतन स्वभाविक है किन्तु बहुत देर न हो इसलिए सामाजिक व्यवस्था का मजबूत होना और भी जरूरी है।

कहा जाता है कि हजरत निजामुद्दीन औलिया एक महान् संत, विचारक और पैगम्बर के अवतार स्वरूप थे। गरीबों व जरूरतमंदों की खिदमत उनका ध्येय था। वे आम आदमी के हित की कामना करते थे। तत्कालीन बादशाह गयासुदीन तुगलक उनके नेक कार्यों से खुश नहीं था अपने आपको वह खुदा से बड़ा मानने की गलतफहमी में जीता था। उसके इर्द-गिर्द के लोग भी अपने हितों के संरक्षण के लिए बादशाह की झूठी जी हजूरी में लगे रहते थे। इसी सनक में बादशाह गयासुदीन तुगलक ने फरमान जारी कर दिया कि या तो हजरत निजामुद्दीन इन सब कार्यों को छोड़ कर उनके सामने आकर क्षमा मांगेंगे या बादशाह स्वयं हजरत साहब का कत्ल कर देंगे। किन्तु औलिया को फरमान सुनकर कोई फर्क नहीं पड़ा वे अपने नेक कामों में लगे रहे। दूसरी तरफ बादशाह ने कूच किया और हर पल की खबर हजरत साहब को दी जाने लगी। कुछ लोगों ने बताया कि बादशाह अब सिर्फ चालीस कोस दूर हैं- फिर कुछ लोगों ने कहा दूरी अब तीस कोस रह गई है - अगले मुसाफिरों ने आगाह किया कि अब तो दूरी सिर्फ दस कोस बाकी है। हर बार हजरत साहब बात सुनते और हंस कर कह देते कि अभी दिल्ली बहुत दूर है। जब घबराते हुए भक्तों का समूह हजरत साहब के पास आया और बोलने लगा कि अब तो मुश्किल से से पांच कोस की दूरी पर ही बादशाह आ पहुंचा है। औलिया हजरत निजामुद्दीन हर समय बेफिक्री से एक शांत भाव से उत्तर देते रहे दिल्ली अभी बहुत दूर है। और अचानक खबर आयी कि जिस तम्बू में बादशाह ग्यासुदीन तुगलक आराम फरमा रहे थे वह तम्बू टूट कर गिर पड़ा और वहीं उसकी मौत हो गई। एक संत और औलिया का आत्मविश्वास एवं सत्य के लिए उनकी साधना इतिहास की मिसाल बन गई- कई बार मन में यह भाव उठता है कि क्यों नहीं अब कोई औलिया हजरत निजामुद्दीन हमारे बीच आता है।

पंजाबी कवि अवतार सिंह पाश ने अपनी एक कविता में कितनी व्यथा से पूछा है कि ''कोई क्या अन्तर कर पाये भाप और धुंए में'' - सत्य को परखने और सत्य कहने की क्षमता रखने वालों की पौध इतनी धीमी क्यों बढ़ती है कि हम वर्षों तक किसी प्रेमचन्द, यशपाल, जैनेन्द्र, अज्ञेय, विष्णु प्रभाकर, अमृतलाल नागर, भगवती चरण वर्मा, शरतचन्द्र, रवीन्द्रनाथ जैसी बुलन्दी छूने वालों से वंचित रहते हैं। मनुष्य को मनुष्य की तरह जीने की सीख हर कोई नहीं दे सकता। ऐसे ही कालजयी पुरुषों की बातों का निचोड़ है कि ''संकट की घड़ियों को तो भूल जाओं पर उनसे मिली सीख मत भूलो'' अनुभवी युग पुरुषों की यह सास्वत सीख है कि जब आप जिन्दगी में आगे बढ़ते हैं, सफलता की ऊंचाइयों पर पहुंचते हैं तो रास्ते में मिलने वाले हर साधारण से साधारण व्यक्ति की भी उपेक्षा मत करना क्योंकि जब आप उन ऊंचाइयों से फिसलेंगे तब इन्हीं लोगों से आपका सामना होगा।

यही कारण है कि लेखक ने अपने इस काल क्रम में मुरारजी देसाई की सरकार से लेकर अटल बिहारी वाजपेयी के कार्यक्रम तक का सटीक और सही चित्रण किया है। युगोस्लोवाकिया के लौहपुरुष मार्शल टीटो के नेतृत्व और बाद में इस महान् देश के विघटन का आलेख करते हुए बहुत कुछ संदेश दिया है। अफगानिस्तान में दूसरों के हस्तक्षेप का भयानक परिणाम यदि तत्कालीन सरकार समझती तो वहां आज ऐसी स्थिति नहीं बनती। इराक व इरान की धरती पर हो रहे नरसंहार का अन्त इस सदी को भी कितना वेदनामय बनाएगा कहना मुश्किल है। साम्यवाद के पतन की कहानी भविष्य में किसी बड़ी क्रांति को उभरने देगी इसमें संदेह होता है। राजनैतिक व्यवस्था जिस स्थिति में है वह मानवीय सफलताओं को कितना झकझोरेगी कहा नहीं जा सकता। लेखक को तो इस महान् देश के एकजुट बने रहने में भी संदेह होता है- ऐसी स्थितियों और परिस्थितियों में लेखक का और चिन्तकों की कितनी बड़ी जिम्मेवारी बढ़ जाती है यह विचारणीय है। सामाजिक संगठनों का दायित्व तो और भी ज्यादा हो जाता है। पुस्तक में वर्णित अनेकों बिंदु ऐसे हैं कि आपके लिए पूरी व्याख्या करना बेहद कठिन हो जाएगा।

कितने आश्चर्य की बात है कि लोकाचार और सामाजिक मान्यताओं में कई ऐसे कार्य भी होते हैं जिन्हें हम सात्विक और धार्मिक मानते हुए भी पूरी तरह उनके प्रति आश्वस्त नहीं हो पाते। आजकल तक अजीब होड़ लगी है वह है जगह-जगह अखण्ड रामायण पाठ। इस अखण्ड रामायण पाठ के पीछे ऐसी मान्यता बताई जाती है कि इससे व्यक्ति की मनोकामनाएं पूर्ण होती है, घर में लक्ष्मी आती है, समय पर बरसात होती है यहां तक कीनिपूतों के घर पुत्र जन्म लेते हैं। लेखक ऐसी मान्यताओं के प्रति अपनी आशंका व्यक्त करने में नहीं झिझकता एवं पूछता है क यदि यह सब सही है तो राजस्थान में हर दूसरे तीसरे साल अकाल क्यूं पड़ता है। आम आदमी दुःख तथा गरीबी का संताप

क्यों सहता है। क्यूं औलाद अपने बूढ़े मां-बाप की सेवा करने में हिचकते हैं। क्यों भाई भाई आपस में लड़ते हैं। यह बहस का विषय हो सकता है परन्तु लेखक ने बेबाक ही समाज को सत्य जांचने और परखने का सीधा सवाल किया है। लेकिन क्या हम एक भ्रमित और पाखंड से ग्रस्त समाज को सृजन का यथार्थपरक बोध करा पाएंगे।

परन्तु सोचने और परखने के विकल्प निरन्तर रहते हैं। यह इस पर निर्भर करता है कि आपको इसका बोध हो। श्री केसरी सिंह जी रावत को जब राज्य पुरस्कार विजेता से सम्मानित किया जाता है तो स्वाभाविक प्रतिक्रिया होती है- राज्य पुरस्कार का मतलब पाखण्ड, प्रदर्शन एवं अफसरों की जी हजूरी का तोहफा। शायद यह अवधारणा हर समय और हर व्यक्ति के लिए सही नहीं होती। जब तक विचार गोष्ठी में श्री केशरी सिंह जी रावत कहते हैं कि ''मैं किसी भी गोष्ठी में एक फुलस्केप साइज का कागज लेकर उसको तीन भागों में विभक्त कर लेता हूं और एक भाग में बोलने वाले के संक्षिप्त विचार नोट करता हूं दूसरे भाग में अपने मन में उठती शंकाओं का आलेख करता हूं और तीसरे भाग में उस पर अपने विचारों के अनुसार संभव समाधानों का विवरण वर्णित करता हूं, ताकि समय के अनुसार लेखन और कथन में उनका सही उपयोग करना संभव हो। और उनकी इसी एक स्पष्टता ने सच्चाई को उद्घाटित कर दिया और राज्य पुरस्कार विजेता के उनके आधार को अधिक सम्मानित कर दिया।

यदि आपको सामाजिक व्यवस्था, व्यक्ति के व्यक्तित्व और जीवन के सत्य को पहचानना है तो लोगों के बीच में सम्मिलित होइए, विचार गोष्ठियों में भाग लीजिए, उनके साथ निजी रिश्तों को आत्मीयता प्रदान कीजिए, संभव है तब आपको कई सोनेरी पांखा वाली तितलियां प्रलक्षित होगी और आप आल्हादित होंगे। तब आप जीवन का सत्यम्-शिवम् सुन्दरम् का अहसास कर सकेंगे।

जहां समकालीन घटनाओं की मर्मस्पर्शी भावनाएं आपको झकझोरती है वहीं इतिहास पुरुषों के उद्बोध आपको अपने व्यक्तित्व को संवारने के लिए बहुत कुछ प्रेरणा प्रदान करते हैं। महान् लेखक अवेक्सेई तोलस्ताय को उद्धृत करते हुए जब यह कहा जाता है कि लेखक को प्रतिदिन कुछ न कुछ लिखना चाहिए भले ही महज चार पंक्तियां ही हो क्योंकि उससे लिखने की हमारी क्षमता और समझ निखरती है।

अमृत प्रीतम की कहानी ''गुलियान का एक खत'' का प्रसंग जिस संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया है वह किसी भी सामाजिक व्यवस्था के अस्तित्व को झकझोर देता है। गुलियान एक बेहद सुन्दर और दिलेर महिला है। अपने बूते पर जीने का उसका जज्बा और हिम्मत उसे प्रेरित करती है कि वह अकेली इस सामाजिक व्यवस्था का अध्ययन करे। उसकी पवित्रता और विश्वसनीयता को नया आधार दे और देखे कि इस पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था में औरत को उसका सम्मान और स्वाभिमान कितनी गति से प्रतिष्ठित करने में सक्षम बन सके। उसका प्रयास होता है कि औरत को उसके जीने के और विकास के समान अवसरों को वह मूर्त रूप दे सके। किन्तु ऐसा नहीं हो पाता। मनुष्य के दंभ, विकृत मानसिकता एवं पाश्विकता की पराकाष्ठा से ग्रस्त इस पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था में गुलियान आदिम हवस की शिकार हो जाती है। मानवीय सभ्यता फिर जारजार होकर खंडित हो जाती है और पूरी मानवता लांछित होती है- और फिर एक ज्वलंत प्रश्न गुलियान सामाजिक व्यवस्था के कर्णधारों के आगे छोड़ जाती है कि इस धरती पर पवित्रता को प्रतिष्ठित करने का अधिकार क्यूं नहीं होता जिसका नाम औरत है। यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका इमानदारी से हल नहीं खोजा गया है। यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका सामना हर पीढ़ी को करना है - लगता है हमारे सामाजिक संगठन और पूरी सामाजिक व्यवस्था बेमानी हो रही है। इन आशंकाओं का समय रहते समाधान नहीं खोजा गया तो हम अपनी अस्मिता की रक्षा नहीं कर पाएंगे और न एक घिनौनी मानसिकता से अपनी पीढ़ी को बचा पाएंगे।

समाधान का प्रयास सतही करने से समाधान नहीं होते- उनके लिए सास्वत व निरन्तर प्रयास जरूरी है। बहुत कुछ किया जाना जरूरी है हम पहल करें- दुष्यंत कुमार फिर यात आते हैं-

यहां आते-आते सूख जाती है सारी नदियां
मुझे मालूम है पानी कहां ठहरा हुआ होगा।●

पंछी

प्रीत का रीत बता दे पंछी, मानवता हमें सिखा दे पंछी।
भाई बना भाई का दुश्मन, इनका द्वेष मिटा दे पंछी।
भारत के खोये वैभव को, फिर से वापिस ला दे पंछी।
राम राज्य के मूल मंत्र को, जन-जन तक पहुंचा दे पंछी।
अनैतिकता पर नैतिकता की, अब तो धाक जमा दे पंछी।
भूखे पेट कोई न सोवे, ऐसा माहौल बना दे पंछी।
मेरी प्यारी मातृभूमि को, फिर से स्वर्ग बना दे पंछी।

- परशुराम तोदी 'पारस', सलकिया

अन्तर्द्वन्द्व

कांई सांच है, कांई शिव, कांई सुन्दर ?
शिव रो अरचण,
शिव रो वरजण,
कहूं विसंगत या रूपांतर ?
वैभव दूणो,
अन्तर सूणो,
कहूं प्रगति या प्रतिस्थलांतर ?
फकत संक्रमण ?
या नयो सरजण ?
स्वस्ति कहूं या रहूं निरूत्तर ?

(साभार : म्हारी इक्कवान कवितावां)

कवि : श्री अटल बिहारी वाजपेयी
रूपान्तरकार : श्री रामनिवास लखोटिया

परिवर्तन नहीं नया निर्माण

✍ वीरभद्र शिरोमणि

कोई भी परिवर्तन अस्थायी उपचार ही नहीं, स्वयं भी परिवर्तनशील है। समाज को आवश्यकता नये निर्माण की है। वह आरोपित नहीं होता, भीतर से उभरता है, और यथार्थ में प्रगतिशील होता है।

क्या आप सचमुच नये समाज का निर्माण चाहते हैं ? क्या जो कुछ समाज में आप चाहते हैं वह सचमुच नये समाज कही निर्माण है ?

देश का आज प्रत्येक शिक्षित और प्रगतिशील विचारों वाला व्यक्ति अपने समाज में कुछ परिवर्तन चाहता है। किन्तु उसकी यदि गहराई में जायें तो वह सारा परिवर्तन कुछ व्यक्तिगत सुविधाओं, आश्वासनों और रक्षाओं की अपेक्षा से भिन्न कुछ नहीं होता। नये समाज का 'निर्माण' वह नहीं होता, कुछ होता है तो परिवर्तन मात्र ही।

परिवर्तन समाज में सदा होते आये हैं। जब जिस राजनैतिक दल या जैसी विचारधारा के पोषकों के हाथ में शक्ति आयी, उसने स्थिति-परिस्थिति और समाज-व्यवस्था में अपने अनुकूल परिवर्तन किये हैं। यही परिवर्तन थे कि समय-समय पर और देश-देश में साम्राज्यवाद, साम्यवाद, जनतन्त्रवाद, एकतन्त्रवाद, स्वतंत्रवाद, अर्थतन्त्रवाद, आस्तिकवाद, नास्तिकवाद, आदर्शवाद, मानववाद आदि अनगिनत वादों का जन्म लाये। और जब जहां जैसा परिवर्तन आया, लोक-समाज ने उसके जुए को अपने कंधों पर स्वीकार करने और उसके तले सुख-संतोष की सांस लेने का प्रयत्न किया है।

लेकिन किसी भी वाद के जुए तले कोई भी जन-समूह अधिक काल तक सुख-संतोष की सांस ले नहीं पाया। इस प्रकार यह यदि ठीक है कि किसी भी वाद का पूरा और निर्बाध प्रयोग अभी तक नहीं किया जा सका तो उसका कारण यही है कि किसी भी वाद का पूरा और निर्बाध प्रयोग अव्यावहारिक और अप्राकृतिक है। संसार के 'सबसे बड़े' और 'सबसे अधिक लोक-हितैषी' वाद साम्यवाद की विफलता प्रत्यक्ष ही है। शत्रुओं को जन्म देने की जितनी शक्ति तइस वाद में है उतनी शायद अन्य किसी वाद में नहीं, और जो सतत संघर्ष इससे उपजता है, उसके रहते समाज में शान्ति तो सम्भव नहीं।

राजनैतिक वादों की यह बात दूसरे सामाजिक वादों पर भी लागू होती है। केन्द्रीकरणवाद या विकेन्द्रीकरणवाद, कर-श्रमवाद या कल-श्रमवाद, संग्रहवाद या वितरणवाद, नियन्त्रणवाद (जैसे- एकपतिवाद, एकपत्नीवाद, एकप्रियवाद, स्वधनवाद, पर-धनवाद) या स्वच्छन्दतावाद आदि किसी या किन्हीं भी वादों के आयोजन से समाज का काम नहीं चल सकता।

स्पष्ट ही परिवर्तन और नया निर्माण एक नहीं, दो अलग-अलग बातें हैं। कभी हुआ हो नया निर्माण, पर इतिहास के परिचित काल में तो हमारे समाज में सदा परिवर्तन ही होता रहा है। और कोई भी परिवर्तन कुछ समस्याओं का अस्थायी उपचार भले हो जाये, अनिवार्य रूप से वह कुछ नयी समस्याओं को भी जन्म दे देता है। यह सम्भवत: इसीलिए कि परिवर्तन बाहर से आरोपित की हुई विभिन्नता होती है, जबकि नया निर्माण भीतर से उगी हुई कृति है। दोनों का भेद और स्पष्ट किया जाये ?

किसी नगर का परिवर्तन करें तो उसके कुछ मकानों को तोड़कर नये ढंग के बनवा देते हैं, सड़कें चौड़ी और सीमेण्ट-कोलतार की बनवा देते हैं, जगह-जगह पार्कों और नये रास्तों की व्यवस्था कर देते हैं। इस सबसे नगर कुछ अधिक सुन्दर और सुविधाजनक दीखने लगता है। यह परिवर्तन आंशिक भी हो सकता है और सम्पूर्ण भी, पर रहेगा वह परिवर्तन ही। किन्तु उस नगर में कुछ दूर हट कर खुली भूमि पर नयी सामग्री से नयी योजना लेकर नये नगर का निर्माण किया जाये और वहां सब रहें-बसें तो यह उस नगर का नव-निर्माण हुआ। नयी दिल्ली इसका उदाहरण है।

परिवर्तन में पहले विध्वंस करना आवश्यक होता है, उसमें पुरानी सामग्री का बहुत कुछ उपयोग किया जाता है, उसका सारा नया रूप पुरानी भूमि और ढंकी हुई पुरानी नालियों के ऊपर ही स्थित रहता है। उसका वातावरण पूर्ण परिवर्तित नहीं ही होता। इससे भिन्न निर्माण में आधार-भूमि से लेकर सारे आकार-प्रकार तक सब कुछ नया होता है, और उसके लिए विध्वंस कहीं कुछ नहीं करना पड़ता। परिवर्तन स्वयं परिवर्तनशील है, सदा प्रगतिशील है तो केवल निर्माण ही। किसी वस्तु के आकार-प्रकार को बाहर से बदलना परिवर्तन है, उसमें भीतर से नये आकार का उभार निर्माण है। परिवर्तन में परिश्रमपूर्वक विध्वंस करना आवश्यक है, निर्माण में नयी रचना के साथ साथ पुराने जीर्णावशेषों का क्षय आपोआप और बिना प्रयास होता चलता है।

यह स्पष्ट है कि हमारे समाज के जीवित रहने के लिए नया निर्माण आवश्यक है परिवर्तन नहीं। समाज की जो व्यवस्था चली आती है वह संग्रह, अपहरण और भय की प्रवृत्तियों पर खड़ी है। आज सामाजिक जीवन और व्यवहार के किसी भी क्षेत्र में देखें, समाज का सारा विधान, उसकी सारी नैतिकता, सारी आदर्शवादिता-धार्मिकता देने से अधिक लेने की, कर्त्तव्य से अधिक अधिकार की, प्रवृत्तियों पर आरूढ़ है। और ये प्रवृत्तियां समाज में अत्यंत सूक्ष्मता और चतुराई के साथ व्याप्त हैं। जीवन को यथार्थ रूप और भाव मिले इसके लिए वास्तव में आवश्यकता समाज के परिवर्तन की नहीं नये निर्माण की है। और वह बलात् उभरता भी नहीं आ रहा है क्या ?●

समरस समाज के लिए आवश्यक है 'अन्तर्जातीय विवाह'

✍ सी.एल. साँखला, कोटा (राजस्थान)

हमारे भारतीय समाज में समरसता की संकल्पना को मूर्त रूप दे पाना एक कठिन चुनौती है। क्योंकि आजादी के बाद देश में जातिवाद निर्मूल, निष्प्रभावी होने के बजाय ज्यादा प्रबल एवं धारदार हो गया है। समाज के लिए घातक और विघटनकारी माने जाने वाले जातिवाद को प्रारम्भ में अशिक्षा एवं अज्ञानता की ऊपज माना जाता रहा और अपेक्षा की गई कि शिक्षा और विकास के साथ ही भारतीय समाज जातिवाद एवं भेदभाव की कोढ़ से मुक्ति पा लेगा...। परन्तु पिछले छप्पन वर्षों का अनुभव बताता है कि 'खाज त्यों त्यों बढ़ती गई, ज्यों ज्यों उसे खुजाया गया।' आखिर इस मर्ज की दवा है क्या.... ?

अत्यंत आश्चर्य की बात है कि शिक्षा के प्रसार के उपरान्त जातिवादी-भेदभाव अधिक मजबूत हुआ। सामाजिक विद्वेष, वैमनस्यता, हिंसा, अत्याचार अधिक बढ़ गए। आज तो हालात ये हैं ज्यादातर हिंसाएं, अत्याचार-अनाचार भी जातीय भेदभाव के परिणामस्वरूप ही हो रहे हैं। चाहे बिहार हो या उत्तर प्रदेश, राजस्थान हो या मध्य प्रदेश, देश का कोई भी हिस्सा हो सामाजिक विद्वेष और हिंसा की लपटें सब ओर झुलसाने लगी हैं। जो राष्ट्रीय एकता, अखण्डता, विकास और शांति के लिए अत्यन्त खतरनाक हैं। अवर्ण-सवर्ण में बंटा भारतीय समाज अपनी उन्नति और विकास की कितनी भी दुहाई दें, परन्तु यह असत्य नहीं है कि यहां पर अभी भी दलित-अवर्ण कहे जाने वाले लोगों को मंदिरों में नहीं घुसने दिया जाता। इनके दुल्हों को घोड़ी पर बैठने और बैण्डबाजे बजाने पर पाबन्दी लगा दी जाती है। सामाजिक अन्याय-अत्याचार को चुपचाप न सह कर प्रतिवाद करने पर सामूहिक बलात्कार को चुपचाप न सह कर प्रतिवाद करने पर सामूहिक बलात्कार, निर्वस्त्र करके मारना-पीटना, सामूहिक हत्या जैसे जघन्य-राक्षसी, बर्बर अत्याचार निर्भयतापूर्वक कर दिये जाते हैं...। बाद में प्रभावशाली लोगों के दबाव में समझा बुझा कर मामले रफा-दफा कर दिये जाते हैं या फिर गवाह-सबूतों के अभाव में अपराधी बाइज्जत बरी हो जाते हैं। आजादी के ५६ वर्षों बाद भी हमारे भारतीय समाज की यह दुर्दशा हमें शर्मसार किये बिना नहीं रहती। मानवीय स्वतंत्रता के पोषक लोकतंत्र में भी अगर इंसान स्वतंत्र सांसें न ले सके तो यह व्यवस्था पर कई प्रश्नचिन्ह खड़े कर देती है।

समाज को मानवीय, समरस और न्यायपूर्ण बनाने के लिए जातीय भेदभाव से मुक्ति पाना बेहद जरूरी है। महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए भी जातिगत कटघरों से मुक्त होना आवश्यक है। क्योंकि जातिगत पंच-पटेल महिलाओं पर तरह-तरह के बंधन थोपते हैं, जो स्त्रियों की उन्नति और स्वतंत्रता में बाधक बनते हैं। शिक्षा, विवाह, नौकरी, पर्दा, मनोरंजन, खेल, पर्यटन जैसे अनेक मामलों में अभी भी अधिकांश महिलाएं स्वतंत्र निर्णय नहीं ले सकती। कुंवारे पुरुष चाहे कितने भी अनैतिक सम्बन्ध बनाए, परन्तु एक कुंवारी लड़की अगर बच्चे को जन्म दे तो समाज के आका आसमान को सिर पर उठा लेते हैं। एक 'कुंवारी मां' को वे इस कदर दण्डित और अपमानित करते हैं कि वह जन्म भर उबर नहीं पाती, जबकि कुंवारा युवक किसी भी स्त्री में बीज पैदा करके भी समाज में सिर ऊंचा करके घूम सकता है। यह लैंगिक और सामाजिक भेदभाव, अन्याय समाप्त होना ही चाहिए। एक विकसित, उन्नत और समरस समाज के लिए यह आवश्यक भी है।

लड़के और लड़कियों का अनुपात आज अधिक असमान हो गया है। शिशु भ्रूण हत्याएं बढ़ गई हैं। ऐसे में असमान अनुपात से शादी-विवाहों में भी दिक्कतें खड़ी होने लगी है। अथवा योग्यता और स्तर मिल नहीं पाते। परिणामत: कुछ ही समय बाद विच्छेद होने लगे हैं। कितनी ही बातें हैं जो आज के दौर में जातिगत भेदभाव से मुक्त होने की मांग करती है। ...और इसके लिए 'अन्तर्जातीय विवाह' को सामाजिक मान्यता मिलना तो आवश्यक है ही, इन्हें विशेष प्रोत्साहन भी दिया जाना चाहिए। वैसे तो हमारे संविधान द्वारा इन्हें मान्यता भी दी गई हैं, परन्तु व्यवस्था के सूत्रधारों ने इन्हें विशेष प्रोत्साहित नहीं किया है। परम्परागत रूढ़ीवादी मानसिकता भी अवरोध बनती रही है। हालांकि कई संस्थाएं और संगठन 'अन्तर्जातीय विवाह' के लिए सक्रिय रूप से कार्यरत हैं; फिर भी जातीय गठबंधनों के चलते ये 'गौण' प्राय: होकर रह जाते हैं। अतएव भारतीय समाज को अस्पृश्यता, भेदभाव, द्वेषता, अमानवता, अत्याचार से मुक्त 'समरस समाज' बनाने के लिए आज 'अंतर्जातीय विवाह' को एक आन्दोलन का रूप देने की जरूरत है।●

● विवाह के बाद एक बिंद ने अपने ससुर से कहा- आपने मुझे बाइसकल तो दी ही नहीं। ससुर ने उत्तर दिया- आप गलत कह रहे हैं। आपको बांई दी है न। जिंदगी भर उसकी सकल देखोगे। हुई न बाइसकल।

★★★

● एक व्यक्ति ने डाक्टर से कहा- मेरी लड़की बढ़ती नहीं है। इसके लिए कोई दवाई लिख दीजिए। डॉक्टर ने जवाब दिया- इसका नाम महंगाई रख दें। काफी बढ़ेगी।

धरा को उठाओ, गगन को झुकाओ

✍ केवल चंद मिमानी

किसी भी समाज की सर्वांगीण उन्नति के लिए आवश्यक है कि उस समाज के सभी वर्गों के बीच तालमेल हो एवं समाज के प्रति सबका समर्पण हो। मारवाड़ी समाज की वर्तमान अवस्था के मद्देनजर जब हम इसकी आंतरिक संरचना को देखते हैं तो एक भयावह परिदृश्य नजर आता है। समाज आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक स्तर पर कई टुकड़ों में बंटा हुआ है और किसी का किसी से कोई तालमेल नहीं रह गया है। अपनी धाक जमाने के लिए वैचारिक टकराहट भी कम नहीं है।

मारवाड़ी समाज मूलत: व्यवसाय-वाणिज्य से जुड़ा समाज है। सदियों से अपनी मातृभूमि से विस्थापित यह समाज इस मायने में महत्वपूर्ण रहा है कि इसके सदस्यों में आपसी प्रेम, सद्भाव व सहयोग की भावना बलवती रही। ये जहां भी गये आपसी एकता के बूते अपने को स्थापित करने में सफलता पाई। व्यापार में साख बनाना और हर कीमत पर उसकी रक्षा करना मारवाड़ियों के मुख्य गुण रहे। इसी बिना पर यह समाज अन्य समाजों से पृथक माना गया। सामाजिक कल्याण की भावना सदा से इस समाज के लोगों की पहचान रही है। अपनी उन्नति के साथ-साथ औरों की उन्नति का पथ प्रशस्त करके इस समाज के लोगों ने राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में प्रशंसा पाई। चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो या संस्कृति का, धर्म का क्षेत्र हो या आध्यात्म का, विद्यालय का निर्माण हो या अस्पताल का या कि मंदिर, धर्मशाला, प्याऊ आदि का निर्माण हो इस समाज के लोगों की सहयोगिता सबमें सर्वोपरि रही।

इतना सब होने के पीछे मूल कारण यह था कि सामाजिक नेतृत्व के प्रति सबकी आस्था थी। सामाजिक क्षेत्र से जुड़ा व्यक्ति भी यह समझता था कि समाज के प्रति उसकी जिम्मेवारी क्या है? व्यापारी अपनी कमाई का एक अंश सामाजिक कार्यों में दान करके आत्मसंतुष्टि पाता था।

लेकिन आज ऐसा नहीं हो रहा है तो जरूर इसके पीछे कुछ कारण है। मेरी नजर में इसका पहला कारण धनी और निर्धन के बीच बढ़ता फासला और संवादहीनता की स्थिति है। जिसके पास पैसा है वह अपने को आम समाज से इतर मानता है। पैसे के जोर से खुद को पूजवाने का हरसंभव उपक्रम करता है जिसे मानसिक तौर पर स्वीकृति नहीं मिलती। हां, मजबूरी में ऐसे कार्य किये जाते हैं। समाज के आम आदमी के साथ सम्पन्न वर्ग के लोगों का कोई संवाद नहीं है जिसके चलते समाज की सच्चाइयों से वह वाकिफ नहीं है। विज्ञापनिक सच्चाई के सहारे अपना प्रभाव जमाने की उसकी कोशिश इसी वजह से हास्यास्पद होती है। जिस साख के चलते मारवाड़ी आगे बढ़े वह साख भी अब खत्म होती जा रही है। दिखावा, फिजूलखर्ची, प्रदर्शन, आडम्बर की होड़ाहोड़ी में संचित धन का अपव्यय हो रहा है एवं प्रतियोगिता के दौड़ में टिके रहने के लिए आवश्यक संसाधनों से लोग वंचित हो रहे हैं। समाज का युवा वर्ग हालांकि शिक्षित, प्रतिभावान, उद्यमी एवं दूरदर्शी है पर सही मार्गदर्शन के अभाव में वह अपनी क्षमताओं का समुचित उपयोग नहीं कर पा रहा है। सामाजिक क्षेत्र में भी उसकी उपस्थिति नगण्य है और कहीं है तो वह धार्मिक आयोजनों तक सीमित है जिसका उत्पादकता से कहीं कोई संबंध नहीं। इसलिए यह विचारणीय प्रश्न है कि समाज को आने वाले दिनों में किधर ले जाना है। वर्तमान स्थिति तो पतनोन्मुख है अत: विकास के लिए स्थितियों में बदलाव समय की मांग है।

कवि और पीड़ा

– श्रीमती कोमल अग्रवाल, सचिव
मारवाड़ी महिला समिति, जूनागढ़ (उड़ीसा)

सचमुच बहुत पीड़ित है कवि
धूमिल हो गई इन्सानियत की छवि,
जीवन की सत्यता को कागजों पर उतारता कवि
झोंपड़ी की आग को, हैवानियत के बाग को
झूठे आश्वासनों के राग को, सफेद वस्त्रों के अदृश्य दाग को
अपनी शब्द संरचना के साथ कल्पनाओं में निहारता कवि
पीड़ा की आग में वो खुद ही झुलस रहा,
क्या-क्या लिखे कि वो किस-किस में झुलस रहा
दो बूंदे जल कीडालने को बेचैन वो जिस-जिस में झुलस रहा,
सच है - कवि और पीड़ा का बहुत गहरा सम्बन्ध है।
इस सम्बन्ध में आगे ही ४१० को और श्रोताओं के करवद्ध हैं
कब उसकी कविता इस पीड़ा से होगी आजाद
क्या दर्द खत्म होगा उसकी सृजनशीलता खत्म होने के बाद
नदियों के इस पार तो उस पार में है कवि
कभी रोशनी तो गहरे अंधकार में है कवि
कभी शांत लहरों पर तो उफनते ज्वार में है कवि,
किस-किस से बचे कि ऐसे वक्त की मार में है कवि
जो खत्म न हो सकेगा कभी
शायद उस इन्तजार में है कवि
शायद उस इन्तजार में है कवि।.....

- व्यंग -

भगवान कैयो हो

✍ डॉ. सूर्यबाला, कालू (बीकानेर)

आज भगवान रै मिंदर मांय दिनुगै सूं घणी चैहल-पैहल ही। कारण कै आज प्रदेस रा नूंवा नियुक्त संस्कृति सचिव साब भगवान री आरती करण पधारण आळा हा या कय सकां कै 'विजिट करण आळा हा'। सो आ चैहल-पैहल आज सूं नीं कैई हफ्तां पेलां सूं ही। मिंदर रै मांय बारै साफ सफाई हुवै ही अर आसै-पासै रो कादो-कीचड़ साफ करवायो जा रैयो हो। नाळयां अर खाडां में बिना मिलावट रो डी.डी.टी. छिड़कायो जावै हो। मिंदर रै मांय तख्तां पर बैठ्या देवी-देवतां नै सिंदूर तेल सूं चुपड़'र चमकायो जावै हो। मिंदर रै आगणै में मसोते सूं ईंसी सफाई करयोड़ी ही कै खुद भगवान नै ई विश्वास नीं हुवै हो, कै ओ आगणो उणरै मिंदर रो है। मिंदर रै कन्नै खड़ी तेल सिंदूरा टिकी अर प्रसाद री रैड़या (ठेला) नै मिंदर सूं घणो अळगो भेज्यो जा रह्यो हो।

सांची में आ बात सगळा नै ई ठा पड़गी ही कै सचिव साब धार्मिक आदमी है। तीज, त्यौंहार, यज्ञ, प्रवचन आद में उणरी घणी आस्था है ओ ई कारण हो कै सैहर रै दौरे रो कार्यक्रम बणतां ही उणा राष्ट्रीय स्तर रै सांस्कृतिक महताऊ आळै इण मंदिर में आरती करणै री मनस्या करी ही। ई बात रो फळ हुयो कै ओ मिंदर आंख फरतां रै सागै किणी ब्याहजोग हिन्दुस्तानी छोरी रै घर में बदळग्यो हो।

सचिव साब सिंझ्या री आरती करणी चावै हा। आरती रो टेम हो साढ़ी सात बजी। बरसां सूं आ ही रीत चालै ही पण बरसां सूं किणी सचिव साब तो मिंदर में आरती करणै री मनस्या कोनी करी, जिकी इण सचिव साब करी ही। ई खातर भगवान अर पुजारयां रो ओ फर्ज हो कै उणरी मनस्या पूरी करै।

उडीक सरू हुई। सचिव सा'ब रै आवणै में मोड़ो होवणै सूं आरती री बेळा टळती जावै ही। छोटो पुजारी आकळ-बाकळ होयनो बड़ा पुजारी कांनी देखै हा अर बड़ा पुजारी भगवान कांनी। भगवान खुद ई असमंजस (गतागम) में हा। ई खातर तथास्तु अर एवमस्तु सूं रळयो-मळ्यो ईस्यो सिग्नल देवै हा कै बीं रो कोई भी भी अर्थ लगायो जा सकै हो।

बड़ा पुजारी अनुभवी हा। उणां सही अर्थ लगायो कै भगवान री मनस्या है कै सचिव सा'ब रै चावण तांई आरती नीं हुवै तो ठीक रैसी। बड़ा पुजारी रै इण फैसले रो बीजां सगळा पुजारी अन्तस सूं स्वागत कर्यो। चालो उडीक और ही सही... अब जद भगवान कैवै है तो सोच समझ'र ही कैवे हुवैला।

छेवट अेक लाल बत्यां री गाड़ी मिंदर रै ध्रुव द्वार आगै आई रुकी। कैई छोटा-बड़ा अधिकारी सूं घिर्या सा'ब गाड़ी सूं उतर्या। सचिव सा'ब रै सागै भीड़ मिंदर कानी चाल पड़ी।

त्यारी पेलां सूं ही। हर-हर महादेव रै जैकारै (जयघोष) सागै आरती इण भांत सरू हुवी जाणै सचिव सा'ब रै रूप मांय भगवान अबैई पधार्या है। सबसूं पेलां बड़ा पुजारी सचिव सा'ब रै सांमी आया उणरै टीको काड्यो अर माला पैराई अर पछै विधिपूर्वक आरती करवाई। इत्ती देर तांई छोटा पुजारी अर द्वारपालक साधारण भक्तां नै परणै तगड़ता रैया।

भगवान घणै प्रेम सूं मिल्या। इसी सचिव सा'ब नै आस नीं ही। सचिव सा'ब आस्थावान भारतीय री तरै गळगळै मन सूं हाथ जोड़नै कैयो- 'घणा दिनां सूं आपरा दर्शन करण री मनस्या ही, प्रभु! आज पूरी हुई। भगवान ई गणै प्रेम सूं बोल्या खुद म्हनै ई घणी इच्छा ही थारै दर्शन री।' सचिव सा'ब उचक्यां थानै म्हारै दर्शन री मनस्या? थे कै कैवो भगवान, समझ में कोनी आयो!' भगवान उबक्यां लेवतां कैयो- 'ठीक केवूं साब।' देखो कोनी आजकाल पढ्या-लिख्या, सभ्य लोग मिंदर आवै कठै है। तरस ज्यावूं किणी सूटेड बूटेड सपारी सूट वाळै आदमी सागै उठण-बैठण नै। कणाई देखो अणपढ़ गांव रा गुंवार आदमी मनोत्यां री पोटळी अर प्रदूषित जल रो लोटो लियां खड़्या लाधसी।

भगवान खुद ई मनगत रै मूडमांय हा। आगै बोल्या- 'मिंदरां मांय आपसरी री होड़ इत्ती बढगी कै जिका लोगां में थोड़ी भोत श्रद्धा भक्ति बची है बै ई उणी मिंदर में जावणशे चावै जिकै मिंदर री पब्लिसिटी बढ़चढ़'र हुवै। लूंठा अर नामधारी मिंदरां में नगदी अर चढ़ावो ही घणो पूगै अर जठै चढ़ावो घणो पूगसी महिमा तो बठै री ही गाईजसी नीहं।' इण पछै भगवान अणमणा हुयग्या' अर थोड़ा ठहर'र बोल्या- 'म्हारै इण मिंदर रो सोनै आळशे कळस कद सूं टूट्यो पड्यो है। म्हनें ा है कै मिंदर में चढ़ावो इत्तो आवै है कै उण सूं कळस माथै सोने रो पात चढ़वायो जा सकै पण अै पुजारी सगळो चढ़ावो अर नगदी आपसरी में बांट लेवै। अर पछै प्रेस विज्ञपत्यां सूं सरकार तांई गुहार पुगावै कै मिंदर रो अनुदान बढ़ावणो चाइजै, मिंदर घाटे में चाल रैयो है।'

अठै तांई आवतां भगवान घणा गळगळा हुयग्या। आपरी हालत माथै दु:ख करता कैयो- 'थे ई सोचो कळश रो पतरो टूट्या म्हारी इमेज बिगड़े है कै नी? मिंदर री ही साख गिरै। भगतां नै कांई दोस दैवां, सोचैला जद ई मिंदर रो भगवान खुद ही टूट्योड़ो छत्तर ही नीं बदळ्वा सकै तद म्हारो उघड़्यो छप्पर कांई छवासी, म्हारी बिगड़ी के बणासी। क्यूं नै किणी सिमरथ (समर्थ)' भगवान कांनी चालां।

पेलां रा पुजारी तो कैई म्हारै सूं सम्पर्क करण री कोसिस करता पण आज काल आळा नै तो सांमी देखण नै ई टैम कोनी। जको ज्यादा कमीशन देवै बिनैई घंटा, घड़ियाल अर केवड़ा अगरबत्यां रो काण्ट्रैक्ट दे देवै। पेलां तो म्हारै अंग वस्त्रां री सगळी जरी निकली निकळगी। मिल्क रो रंग ही कच्चो। भगतां सांमी कित्ती लाज आई बता कोनी सकूं।

सचिव सा'ब गतागम में हा। भगवान आपरी बात चालू

राखतां कैयो- 'पुराणी कैवत है, जिकै ठावं में खावै, बिरै मांय ही बेजको करै।' अै पुजारी तो ईयां ही करै है पण छोड़ो... चा पाणी में कै चोखो लागै आपनै।' केवतां भगवान पूजा री घंटी बजाई एक पुजारी मेवा मिठाइयाँ री भर्योड़ी चांदी री प्लेट ल्यायो। भगवान री घणी मनवार सूं सचिव सा'ब लुळ'र थोड़ो प्रसाद लियो पण मिठाइयाँ रै लंटाँ लाग्योड़ी ही अर बा किणी साधारण दुकान री ही।

भगवान समझग्या। ई खातर नीं कै बै खुद अर्न्तजामी हा बल्कि बै रोज ही ई मिठाई नै खावतां ई वास्तै। उबाक्याँ लेवतां बोल्या- जाण द्यो मत खावो म्हारी तो आ मजबूरी है थे क्यूं? साची पूछो तो अबार चा पाणी मंगावाण रो म्हरो अैम हो कै थे ही साच (असलियत) नै जाण सको, नीं तो भगवान नै झूठा समझता। बतावो ईसी थर्ड-किलास चीजां प्रसाद में चढ़ावै तद किसो भगत ई मिंदर में आयसी। चोखोड़ी एक्सपोर्ट क्वालिटी री मेवा मिठाई री बोर्यां पुजारी सगळी सीधी आपरै घरां मंगाव लेवै।

भगवान घणा भावुक हुवै हा अर टेम ही बोळो हुयग्यो हो। इण बिच्चै सचिव सा'ब कैई बार चोर री आंख सूं हाथ घड़ी कांनी देख लियो हो। बारै भगतां री धक्का-मुक्की चालू ही ई खातर सचिव सा'ब हाथ जोड़नै खड़ा हुया अर बोल्या- 'अबै अग्या देवो प्रभु, बारै आपरा भक्त 'घरी ऊतावळ करै। भगवान झुंझळा'र कैयो- होवण द्यो म्हैं धाप ग्यो अठै रै भगतां सूं। पेलां रा भगत घणी सुख सम्पति अर रोगां सूं छुटकारो मांग लेवतां अर म्हैं आसानी सूं तथास्तु कैय देंवतो। अबै टैम रै बदळण सागै लोगां री कामनावा (मनोतयां) ही बदळगी। अबै भगतां नै टेम रै सारू ही चीजां मिलणी चाइजै- जियां देवणौ हुवै दो द्यो उणरी छोर्यां नै किणी टी.वी. धारावाहिक में रोल, मिस यूनीवर्स रो ताज (मुगटे) खुद उणनै या उणरै बेटां नै 'कौन बनेगा करोड़पति' सूं कान्टेक्स कोल या पछै चुनाव रो टिगट, बैहन खातर बिना दहेजी वर। बताओ म्हारै कत्रै....!

अब तांई सचिव सा'ब भगवान री मनगत सुण'र रोवण आळा सा होग्या हा। सचिव सा'ब औपचारिकता सूं मूंडो हलायो अर जावण खातर त्यार हुया। जावंता भळै रुक्या अर भगवान नै नमस्कार करनै औपचारिकता पूरी करी।

ठीक है भगवान् चालूं। बेगो ही भळै कदैई आपरी सेवा में आवरण रो टैम काडस्यूं अबार अग्या देवो।

भगवान अग्या दीवी संकोच सूं। कै दियो, देख्या ई बिच्चै थोड़ो मिंदर रै कलस रो टूट्योड़ो पात (पत्तर) ठीक हुय सकै तो... ●

एक धनवान मोटी महिला एक सौंदर्य विशेषज्ञ सूं पूछी, 'मनै कुण सै रंग रा कपड़ा पहरणा चायै?'

विशेषज्ञ बोल्यो- देखो श्रीमती जी, भगवान जद गावण हाळी चिड़िया बणाई तो चिड़या नै कई रंग दिया, तितली नै रंग बिरंग बणाई, पण हथरी नै तो सिरफ एक ही रंग दियो।

पराई भीड़ री नदी

म्हारी खिड़की रै कनै
भवै एक नदी
रोज दिनूंगै सूं
दस बज्यां ताईं
जद म्है सोवतो रैवूं
तो मकानां रा दरवाजा नै
काट काट'र
भवै एक नदी
म्हनै बेरो है
म्हैं कतो जाणूं ई नदी नै
खिड़की कै सारै बैठ'र
ई री लहरां रा एक-एक दरद नै
खुद झेलूं

म्हारी खिड़की अब बन्द होगी
पण पाछै भी
म्हारी नींद रो एक-एक छिण
ई नदी सूं जुड़्योड़ो है।
नदी रै बैवण री आवाज
तोड़ देवै म्हारी खिड़की रा सीखचां नै
मेरे मांय कीं टूटै
मेरो निजूपणो
नदी में टूट-टूट'र बिखरै
अर मैं ई अणजाण नदी सूं
खुद रो सम्बन्ध जोड़ लेवूं
खिड़की रै कनै
बैठ्यो-बैठ्यो।

- डॉ. कृष्ण बिहारी सहल

युवाओं के समक्ष विकल्प प्रस्तुत करें

✍ पवन जैन, कलकत्ता

किसी भी समाज के उत्थान या पतन में युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती है क्योंकि यही वह वर्ग है जो अपनी उद्दाम इच्छाशक्ति, असीम ऊर्जा और अटूट लगन के बूते सफलता के नये द्वार खोल सकता है, विकास की मंजिल की ओर तीव्र गति से बढ़ सकता है अथवा अपनी नकारात्मक भूमिका से पूरे समाज को संकट में डाल सकता है।

प्रकृति की ऊर्जा और युवाओं की ऊर्जा में एक समानता है और वह है उसे दिशा देने योग्य लोगों की मानसिकता। विज्ञान के अवदान से प्रकृति की ऊर्जा को नियंत्रित करने में काफी सफलता मिली है अन्यथा यह ऊर्जा अनियंत्रित होकर विनाश के कारण बन जाती। इसी तरह युवाओं की ऊर्जा को भी निश्चित दिशा देना होता है ताकि वह उपयोगी हो सके। एक मकान को जोड़ने में जितनी ऊर्जा चाहिए उसे तोड़ने में भी उतनी या उससे कहीं अधिक ऊर्जा चाहिए। अब मुद्दा यह होता है कि हम मकान जोड़ने के पक्षधर हैं या तोड़ने के। ऊर्जा को जिस तरफ संचालित करेंगे वह उसी ओर संचालित होगा।

यहां परिवार और समाज की भूमिका होती है जिसके जिम्मे नई पीढ़ी को संस्कारित करने का जिम्मा है। नई पीढ़ी को संचालित करने में जरा सी भूल होने से ही सारा मामला बिगड़ जाता है।

सम्प्रति मारवाड़ी समाज में युवाओं को लेकर जो भी बहस चल रही है उसमें यही प्रधान तत्व है जिस पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है।

मारवाड़ी समाज भी अन्य समाजों की तरह ही है अतएव इसमें भी वे सारी बातें संभव है जो अन्य समाजों पर लागू है। विकृति सिर्फ मारवाड़ी समाज में नहीं आई है बल्कि सभी समाजों में कमोवेश इसका प्रवेश हुआ है। विकृति के मूल में तेजी से बदल रही संस्कृति है जो सूचना-तकनीक के विकास के साथ-साथ दूरदर्शन, इंटरनेट आदि के माध्यम से हमारे घरों में घुस चुकी है।

जीवन-शैली को विशिष्ट तरीके से जीने की जद्दोजहद एवं प्रतियोगिता में टिके रहने के लिए भागमभाग की स्थिति ने परिवार और समाज में संवेदनहीनता को जन्म दिया है। संयुक्त परिवार नहीं होने से यह स्थिति और जटिल हो गई है। आज पुरानी और नई पीढ़ी में किसी भी विषय पर खुलकर बात करने की मानसिकता नहीं है। माता-पिता व्यस्त हैं, दादा-दादी बच्चों से दूर हैं ऐसे में दूरदर्शन, इंटरनेट या फिर क्लब ही ऐसे साधन हैं जब नई पीढ़ी के युवक व युवतियां अपना समय गुजार सकें। एकाकीपन की यह स्थिति एक समय प्रगाढ़ होकर घर की परंपराओं व समाज की बंदिशों को नकारती हैं एवं युवा अपने मन की करने को आतुर हो जाते हैं। युवाओं की यही अनियंत्रित ऊर्जा खतरनाक परिणाम देते हैं।

आज मारवाड़ी युवा शिक्षा के मामले में बहुत आगे हैं। आधुनिक तकनीक व सूचना से लबालब इस वर्ग को संचालित करने के लिए उनकी ही तरह की सोच का नेतृत्व चाहिए जो उनकी भावनाओं को समझ सके। यहां मुश्किल यह है कि सामाजिक संस्थाओं का नेतृत्व अब तक पुरानी पीढ़ी के हाथों में है जो किसी भी सूरत में नेतृत्व छोड़ने को तैयार नहीं। नई पीढ़ी की जिज्ञासा को शांत कर पाने की क्षमता का अभाव, अनुशासनहीनता की चरम स्थिति एवं नई अवधारनाओं को गलत साबित करने की मानसिकता इन दो पीढ़ियों को संवाद करने से रोकती है।

किसी भी व्यवस्था में परिवर्तन के लिए समुचित विकल्प प्रस्तुत करना आवश्यक होता है। क्या मारवाड़ी समाज में व्यवस्थागत परिवर्तन की मांग करने वाले किसी विकल्प को प्रस्तुत कर पाने की स्थिति में है ? अगर हां तो उस विकल्प को सामने लायें ताकि उस पर बहस हो एवं उसकी औचित्यता प्रमाणित हो। अगर नहीं तो सिर्फ अपनी कुंठा शांत करने के लिए नई पीढ़ी पर दोषारोपण न करें क्योंकि समय के साथ परिवर्तन की आवश्यकता को रोकना संभव नहीं है तब तक जब तक कि वैकल्पिक समाधान सामने न हो।●

३००० वर्ष पुरानी मानव-सभ्यता की खोज

राजस्थान के चित्तौड़ गढ़ के अंतर्गत गिलुंड के आसपास आहर-बनास (३०००-३५०० ई. पूर्व) नामक मानव सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए हैं जो करीब तीन हजार वर्ष से अधिक पूर्व के अनुमानित है। खुदाई में लाली ली हुई मिट्टी की ईंटों से बनी दीवार निकली है। दीवार में पीली कुंडलियां लगी हुई है।

एक भंडार घर भी खोजा गया है जिसमें १३५ मोहरें, कई प्रकार के बर्तन और गाढ़े काले रंग का मिट्टी का एक अवशेष बरामद हुआ है। मोहरें आयताकार और गोल- दोनों ही आकार के हैं लेकिन उन पर कुछ भी लिखा हुआ नहीं है। दूसरी प्राचीन सभ्याताओं के मोहरों से वे भिन्न हैं। ज्ञात हो कि यह खुदाई पेन्सिल्वेनिया विश्वविद्यालय और पुने दकन कॉलेज के पुरातत्व विशेषज्ञ दल की देख-रेख में जारी है।

"निरक्षरता को दूर करने में मारवाड़ी समाज की भूमिका"

✍ सीताराम छापरिया

१०७ करोड़ से से अधिक आबादी वाले भारतवर्ष में करीब ४२ करोड़ लोग अभी भी निरक्षर हैं। यह विधि की कितनी विडम्बना है कि आजादी के ५७ वर्ष बाद भी भारत वर्ष में इतनी बड़ी जनसंख्या निरक्षर है। सबसे अधिक निरक्षरता हिन्दी भाषी उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान एवं दिल्ली में है।

अनेकानेक सामाजिक कार्यों में सबसे आगे रहने का गौरव प्राप्त करने वाला मारवाड़ी समाज, हिन्दी भाषी इन प्रांतों में व्याप्त व्यापक निरक्षरता को दूर करने एवं उनको केरल प्राप्त की तरह साक्षर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। यह बहुत बड़ी समाज सेवा होगी।

इन प्रांतों में प्राथमिक शिक्षा की सभी आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध हैं। इन प्रांतों में हजारों राजकीय विद्यालय हैं। राजकीय विद्यालयों में नाम लिखाने एवं पढ़ने की कोई फीस नहीं लगती। जो गरीब हैं, वे ही निरक्षर हैं। गरीबों एवं दलितों के बच्चे, इन्हीं राजकीय विद्यालयों में पढ़ते हैं। राज्य सरकारों ने लाखों शिक्षक/शिक्षिकाओं को इन राजकीय विद्यालयों में बहाल कर रखा है। ९ हजार से १५ हजार रुपये वेतन, इनको प्रत्येक महीने राज्य सरकार देती है।

यह अत्यंत हर्ष की बात है कि मिड डे मील की योजना इन प्रांतों में कड़ाई से लागू हो गई है जिससे विद्यालय के सभी बच्चों को दोपहर में खाना प्रदान किया जाता है।

यह भी अत्यंत हर्ष की बात है कि व्याप्त व्यापक निरक्षरता को देखकर, केन्द्र सरकार ने सर्वशिक्षा अभियान अन्तर्गत इन प्रांतों की सभी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों को शामिल कर लिया है। इन प्रांतों को साक्षर बनाने में केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार कृत संकल्प है।

सर्वशिक्षा अभियान का उद्देश्य है **सब पढ़े, सब बढ़े**। इनके अन्तर्गत राजकीय प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में हर तरह की सुविधा प्रदान की जा रही है जैसे शौचालय की सुविधा, पेयजल की सुविधा, बैठने की सुविधा, ब्लैक बोर्ड की सुविधा, किताबों की सुविधा इत्यादि। प्राथमिक विद्यालयों के रख-रखाव के लिए तथा आवश्यक सामग्रियों के लिए प्रत्येक वर्ष निश्चित राशि प्रत्येक विद्यालय को प्रदान की जा रही है। (विद्यालयविकास अनुदान-२००/रु. प्रतिवर्ष, विद्यालय भवन की मरम्मति/रख रखाव अनुदान ५०००/- रु. प्रतिवर्ष, शिक्षण अनुदान- प्रति शिक्षक/शिक्षिका को ५००/- रु. प्रतिवर्ष दिया जा रहा है। साथ ही शौचालय निर्माण एवं पीने के पानी हेतु चापाकल के लिए अग्रिम राशि उपलब्ध कराई जाती है। अन्य मदों में भी आवश्यकतानुसार राशि उपलब्ध कराई जाती है।)

(नोट : यह कहना प्रसंग से बाहर नहीं होगा कि पहले चौक इत्यादि के लिए भी राजकीय विद्यालयों को पैसे उपलब्ध नहीं होते थे।)

कहावत है कि अगर स्कूल में पढ़ाई अच्छी हो तब बच्चे मधुमक्खी की तरह खींच कर विद्यालयों में चले आते हैं। मारवाड़ी समाज इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। समाज के पढ़े लिखे व्यक्ति विद्यालयों में विजिटिंग टीचर की तरह सप्ताह के एक घंटा, किसी भी एक विषय पर, अपने क्षेत्र के या अगल बगल के क्षेत्र के विद्यालयों में पढ़ाने के लिए सहर्ष समय दे तब राजकीय विद्यालयों के पढ़ाई के स्तर में बहुत सुधार हो जाएगा।

इस तरह मारवाड़ी समाज इन विद्यालयों में मन से जुट पाएगा। साथ ही मारवाड़ी समाज के २-३ सदस्य, प्रत्येक विद्यालय के समिति के सदस्यों के साथ मिलकर गरीब बच्चों एवं उनके अभिभावकों को बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय में भेजने के लिए प्रेरित करें तब उसका भी बहुत अच्छा प्रभाव होगा। उद्देश्य होगा कि कोई भी बच्चा स्कूल के बाहर नहीं रहे।

महामहिम् राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम जी ने कहा है कि भारतवर्ष में सन् २०२० तक developed nation बनने की क्षमता है। यह तभी संभव है जब हम बढ़ती हुई आबादी पर अंकुश लगाने में सफल हो। वर्तमान में भारतवर्ष की आबादी १०७ करोड़ है एवं प्रतिवर्ष १.७५ करोड़ आबादी बढ़ रही है। २०५० तक आबादी बढ़कर २०७ करोड़ हो जाने का अनुमान है। उस समय की भयंकर स्थिति की कल्पना की जा सकती है। उस समय के हमारे बच्चों को अपार कष्ट का सामना करना होगा।

चीन ने आज से ३० वर्षों पहले ही visualise ही कर लिया था कि साक्षर होने से ही राष्ट्र, जनसंख्या पर नियंत्रण रख सकता है। चीन ने यह भी visualise किया कि वह उन्नत राष्ट्र तभी बन सकता है जब अपनी आबादी घटाकर करीब १५० करोड़ से १२० करोड़ के करीब कर ले। आज चीन का प्रत्येक व्यक्ति पढ़ा लिखा है और राष्ट्र एक दम्पति और एक संतान के सिद्धांत को कड़ाई से लागू करने में सफल हो गया है परिणामस्वरूप चीन उन्नत राष्ट्र की श्रेणी की तरफ तेजी से आगे बढ़ रहा है।

गत सेन्शस ने यह साबित कर दिया है कि साक्षरता से ही बढ़ती हुई आबादी पर अंकुश लग सकता है। केवल प्रांत जहां २५ प्रतिशत मुस्लिम, २० प्रतिशत ईसाई है, हरिजन एवं आदिवासी अन्य प्रांतों की तरह है, साक्षरता की मदद से बढ़ती हुई आबादी को रोकने में सफल हुआ है।

भारतवर्ष की एवं खासकर हिन्दी प्रांतों की जितनी भी समस्याएं हैं, वे प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जनसंख्या की बढ़ोत्तरी से जुड़ी है।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि "They alone live for the welfare of others. Rest are more dead then alive."

महात्मा गांधी ने कहा था "भारत के व्याप्त व्यावहारिक जीवन की अवस्था में पहुंचे लोगों के लिए पढ़ने लिखने का ज्ञान एक प्राथमिक आवश्यकता है। भारत में व्याप्त व्यापक निरक्षरता शर्मनाक है और राष्ट्रीय पाप है जिसे निश्चय ही समाप्त किया जाना चाहिए।

आइये समाज के समाजसेवी बन्धु, हिन्दीभाषी प्रांतों को निरक्षरता के कलंक से मुक्त करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे। राष्ट्र की, प्रांत की, गरीबों की, इससे बढ़कर सेवा नहीं हो सकती है।●

कैसी हो शिक्षा ?

✍ डॉ. दिनेश मणि

शिक्षा के उद्देश्य और मूल्य अब अधिक यथार्थवादी हो गए हैं। आधुनिक युग में शिक्षा को व्यक्ति और समाज की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के प्रभावकारी साधन के रूप में गठित करने की प्रवृत्ति बढ़ी है। देश की नई शिक्षा नीति में शिक्षा को मानव संसाधन के विकास की इकाई के रूप में प्रस्तुत किया गया है, किन्तु शिक्षा के भौतिक पक्ष पर अधिक महत्व देते समय हमें उसके नैतिक (या आध्यात्मिक) पहली की अनदेखी नहीं करना चाहिए। आध्यात्मिक, नैतिक और चारित्रिक पहलू की अवहेलना करते हुए यदि व्यक्ति का विकास भौतिक सुख-समृद्धि बटोरने की मशीन के रूप में किया जाएगा तो इसके गंभीर सामाजिक दुष्परिणाम होंगे। शैक्षणिक संरचना सामाजिक ढांचे का ही एक भाग है। वस्तुत: राजनीतिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक संरचनाएं परस्पर संबंधित एवं परस्पर निर्भर हैं। शैक्षणिक ढांचे को सामाजिक ढांचे से स्वरूप एवं शक्त प्राप्त होती है और प्रतिदान के रूप में शैक्षणिक ढांचा सामाजिक ढांचे को बनाए रखने और उसमें संशोधन व परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

शिक्षा का मूलभूत उद्देश्य व्यक्ति की ऐसी स्वतंत्रता है जो उसके जीवन में पूर्णता की अनुभूति जगाए, सबके बीच समानता लाए, व्यक्तिगत उत्कृष्टता को बढ़ावा दे, व्यक्तिगत और सामूहिक आत्मनिर्भरता लाए और इन सबसे ऊपर राष्ट्रीय एकजुटता पर बल दे। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो हमारी जनता की आंतरिक शक्ति का निर्माण करे, नई पीढ़ी को पुरातन विरासत से अवगत कराए और युवा पीढ़ी को पुरातन विरासत से अवगत कराए और युवा पीढ़ी के समक्ष कला और सौंदर्य के भण्डार खोले। यह भी केवल एक क्षेत्र या एक राज्य की विरासत तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए। स्थानीय संस्कृति, स्थानीय भाषा, स्थानीय विरासत का संगम सारे देश की विरासत, संस्कृति और समृद्धि के साथ होना चाहिए।

शिक्षा इसलिए दी जाती है ताकि हम संचित ज्ञान प्राप्त कर सकें। एक तरह से इसका उद्देश्य लोगों को वह ज्ञान देना है जो हमारे पास है। यही हम आज कर भी रहे हैं, लेकिन हमें इससे आगे बढ़ाना होगा। यही पर्याप्त नहीं है कि बच्चों को हम ज्ञान दें, कौशल सिखाएं और ऐसी नैतिक एवं अन्य मान्यताएं उन्हें दें जो हमें विरासत में मिली हैं। अपनी शिक्षा प्रणाली में ऐसा परिवर्तन करना सचमुच कठिन कार्य है लेकिन यदि हम ऐसा नीहं कर पाए तो विकास की प्रक्रिया को आवश्यक गति नहीं दे सकेंगे। भविष्योन्मुखी शिक्षा केवल विज्ञान और तकनीकी प्रधान शिक्षा नहीं है, यद्यपि विज्ञान और तकनीक भी उसके अंग हैं। यह एक व्यापक अवधारणा है जिसके द्वारा हम नई पीढ़ी को भविष्य की ऐसी दिशा दिखाना चाहते हैं ताकि वे देश के विकास और सुदृढ़ीकरण को सही और व्यापक परिप्रेक्ष्य में देख सकें। इसके लिए एक नई पहल की आवश्यकता है। नई पहल इसलिए कि विकास को केवल आर्थिक विकास मानकर हमने प्राय: सांस्कृतिक, सामाजिक और सच्चे विकास को अनदेखा कर दिया है। यदि हम अब भी इस राह पर चलते रहे तो हमें अपनी संस्कृति और भारतीयता को भी खो देने का खतरा है।

आर्थिक विकास का मतलब किसी तरह की श्रेष्ठता नहीं है। आज हम आंकड़ों के आधार पर कहते हैं क देश की प्रति व्यक्ति आय अधिक है तो वह अधिक विकसित है, अत: बेहतर है, जबकि बेहतर होना तो इससे कहीं अधिक व्यापक बात है। बेहतर होने का मतलब है कि हम क्या सोचते हैं, क्या अनुभव करते हैं। इसका संबंध हमारी पूरी संस्कृति और विरासत से है। ऐसे में शिक्षा क्षेत्र को और अधिक व्यापक होना चाहिए। दूर-दराज या पिछड़े क्षेत्रों में बसे हमारे लोग निरक्षर हो सकते हैं लेकिन हम यह नहीं कह सकते कि उनमें बुद्धि नहीं है। बुद्धिमान वे हैं, कमी है तो केवल साक्षरता की, औपचारिक शिक्षा की। यह व्यवस्था हमें मिलकर करनी होगी। अत: ऐसे उपाय करने होंगे कि औपचारिक शिक्षा कहीं उस बुद्धि और विवेक को समाप्त न कर दे जो हमारे लोगों में पहले से ही है। इस प्रकार औपचारिक शिक्षा द्वारा साक्षरता का प्रसार करना होगा ताकि लोग अंधविश्वास, शोषण से मुक्त हो सकें। साक्षरता दासता से मुक्त होने का एक माध्यम है। साक्षरता से हमारे समाज की शक्ति बढ़ेगी। इसके द्वारा समाज में शोषण के प्रति विरोध की शक्ति बढ़ेगी।

अव्वल तो शिक्षा से ये आशा की जाती है कि वह अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच के अंतराल को दूर करेगी। एक ओर यदि उपलब्ध ज्ञान का प्रसार शिक्षा का एक महत्वपूर्ण कार्य है तो दूसरी ओर नए ज्ञान की सर्जना भी उसका उतना ही महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व है। दूसरे, शिक्षा प्रक्रिया से अपेक्षा की जाती है कि वह उन सबके व्यक्तित्व के सर्वतोमुखी विकास की व्यवस्था करे जो इसमें प्रवेश लेते हैं। शिक्षा को मनुष्य को पूर्ण बनाने में सहायक होना चाहिए। इस परिभाषा में भी व्यक्तित्व के रूप और आकार की जो परिभाषा दी गई है वह कुछ अस्पष्ट-सी है। किसी व्यक्ति के अपने व्यक्तित्व और समाज के बीच जो रिश्ता है, उससे संबंधित महत्वपूर्ण प्रश्नों का कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिल पाता। तीसरे, शिक्षा से यह अपेक्षा भी की जाती है कि वह समाज के विकासात्मक उद्देश्यों को पूरा करे। शिक्षा-दर्शन के आरंभिक दौर में इस कार्य का स्पष्ट उल्लेख नहीं था, किन्तु प्रच्छत्र रूप से यह सदा विद्यमान रहा है। शिक्षा पहले से ही निपुणता तथा व्यवसायीकरण का मुख्य साधन रही है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि शिक्षा के सामूहिक अथवा लोकव्यापी कल्याण तो अवश्य हुआ है, लेकिन वैयक्तिक और वर्ग विशेष के कल्याण को सार्वजनिक कल्याण की अपेक्षा प्राथमिकता दी जाती रही है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि शिक्षा से अब एक साधन के रूप में कार्य करने की अपेक्षा की जाती है- ऐसे परिवर्तन की जो वांछित दिशा में किया जाए और जिसका प्रयोजन पूर्वनिश्चित सामाजिक उद्देश्यों की प्राप्ति हो। इससे यह अपेक्षा भी है कि यह एक ऐसा साधन बने जो समस्याओं का समाधान कर सके, जिसकी सहायता से मानवजाति अज्ञात भविष्य की अनिश्चितताओं और झटकों को सहन करने योग्य बन सके।

सबको प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य उसी स्थिति में प्राप्त किया जा सकता है जबकि समाज का इसमें योगदान हो। पिछले वर्षों में अपनी शिक्षा प्रणाली में हमने सामुदायिक भागीदारी को किनारे कर दिया है। जब तक हम इस स्थिति में सुधार नहीं लाते और इसमें पूरे समुदाय को शामिल नहीं कर लेते तब तक शिक्षा की कमियों को विशेषकर प्राथमिक स्तर पर दूर करना बहुत मुश्किल होगा। अतीत में लोकोपकारी व्यक्तियों ने हमारी शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज एक बार फिर शिक्षा प्रणाली में नागरिकों की वैसी ही भागीदारी आवश्यक हो गई है। हमें ऐसी भागीदारी को बढ़ावा देने के उपायों का पता लगाना है।

चरित्र निर्माण, बच्चे के व्यक्तित्व का निर्माण, सांस्कृतिक विरासत, खेलकूद, ललित कलाओं जैसे सदैव उपेक्षित, लेकिन व्यक्ति के विकास के लिए अधिक महत्वपूर्ण क्षेत्रों की तरफ ध्यान देना होगा। इसके लिए हमें अपने सर्वोत्तम मानव संसाधनों को जुटाना होगा। हमें सर्वश्रेष्ठ बच्चों, सबसे अधिक प्रतिभावान बच्चों और उन क्षेत्रों का पता लगाना होगा जिनमें उनका सबसे अच्छा विकास हो सकता है। हमें उन्हें उनके विशेष गुणों का विकास करने का अवसर प्रदान करना है। सबसे अच्छे बच्चों को सबसे अच्छी शिक्षा उपलब्ध कराना है चाहे उनकी पारिवारिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि कैसी भी हो।

हमें नई शिक्षा प्रणाली में एक नई व्यवस्था का विकास करना होगा। शिक्षा एक बहुत ही विशिष्ट विषय है। हमें अपनी पूरी शिक्षा प्रणाली की व्यवस्था, जिसमें शिक्षकों के प्रशिक्षण से लेकर उनके कार्य निष्पादन, जिम्मेदारी का ध्यान रखना होगा। नई शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य गरीबी को दूर करना तथा समाज को एक नया रूप देना होना चाहिए। इस पर राजनीति, संकीर्णता, जातिवाद, साम्प्रदायिकता तथा धर्मांधता का प्रभाव नहीं होना चाहिए। हमें शिक्षा संस्थानों को और स्वायत्तता देनी होगी। इन संस्थानों के लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना होगा। हमको ऐसी शिक्षा के लिए सुविधाएं जुटाना है जिनसे शिक्षा विकास की दृष्टि से और अधिक उत्पादक बने और जिससे सामाजिक, क्षेत्रीय और भाषाई रुकावटें दूर हों। प्रत्येक भाषा और संस्कृति का विकास करना है लेकिन इससे हमारी विभिन्न संस्कृतियों और लोगों के बीच दीवारें न खड़ी हों।●

सौंदर्य, जिज्ञासा और रहस्य का केन्द्र आमेर का जयगढ़

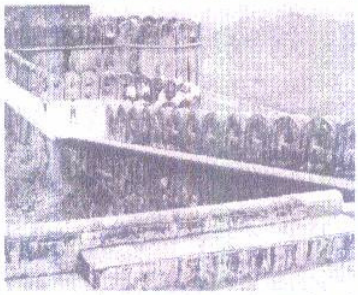

✍ डॉ. तारादत्त 'निर्विरोध'

विश्व विख्यात जयपुर नगर की स्थापना से पूर्व आमेर कछावा राजाओं की राजधानी थी और इसका नामकरण भगवान शिव के पर्याय अम्बिकेश्वर अथवा अम्ब ऋषि से हुआ। मुस्लिम इतिहासकारों ने इसे 'अम्बर' अथवा 'अलिक अम्बर' आदि नामों के रूप में जाना, लेकिन यह आम्बेर या आमर नामों से पहचाना गया।

आमेर में राजप्रासाद भी है, दुर्ग-देवालय भी। शौर्य, शृंगार और भक्ति की त्रिवेणी का एक संगम है इस पुरातन भूखंड में। आमेर का महल लाल रंग की पहाड़ियों पर बना है जहां दूर-दूर तक मनोहारी प्राकृतिक स्थल है। आमेर में शिलादेवी का मंदिर है जहां नवरात्रों में मेला जुड़ता है। यों देशी-विदेशी पर्यटकों का तो वहां अहर्निश मेला लगा रहता है।

आमेर का सुदृढ़ दुर्ग 'जयगढ़' अपनी विशाल काया को पसारे और मजबूती से पांव जमाए एक पहाड़ी पर खड़ा है। चारों ओर फैली घाटी मनोहर हरियाली की चादर ओढ़े हुए है। यह एक रम्य प्रदेश है। यदि बरसात में यहां पुहंचा जाए तो विश्वास नहीं होता है कि यह क्षेत्र राजस्थान का कोई भाग है, बड़ा ही दृष्टव्य, मनोहारी और सुखद। आमेर के किले की ऊंचाइयों से नीचे झांकें तो उत्तर-पश्चिम की तलहटी में प्राचीन नगर के ध्वस्त अवशेष बिखरे पड़े हैं। मध्य युग के प्रसिद्ध कवि पद्माकर ने आम्बेर के इस दुर्ग की गरिमा को यों काव्यांकित किया है- ''जय जय शक्ति शिलाभवी, जय-जय गढ़ आम्बेर, जय जयपुर सुरपुर सदृश जो जाहिर बहुफेर।'' यह नगर कोई साधारण नगर नहीं रहा होगा। आमेर नाम आते ही मुगलकालीन इतिहास के पृष्ठ आंखों के सामने आ जाते हैं।

जयगढ़का निर्माण बादशाह शाहजहां के समकालीन मिर्जा जयसिंह ने शुरू करवाया था और परकोटे आदि का निर्माण भी उन्हीं ने करवाया, किन्तु दुर्ग का प्राय: सारा कार्य दूसरे सवाई जयसिंह के समय पूर्णता प्राप्त कर सका। इस प्रकार दोनों राजाओं को दुर्ग के निर्माण का श्रेय प्राप्त रहा और वे दुर्ग के निर्माता कहे गए। जयगढ़ के भीतर टांके, महल एवं मकानात बने हैं, वहां ऐसे गुप्त स्थान भी हैं जहां सवाई जयसिंह की धरोहर सुरक्षित थी। यों तो यह दुर्ग सुरक्षात्मक एवं रक्षात्मक दृष्टिकोण से बनाया गया था किन्तु इसमें सवाई जयसिंह ने आवास व्यवस्था का भी ध्यान रखा था। यह दुर्ग पर्यटकों एवं नगर नियोजन विशेषज्ञों के लिए बाहरी रूप से जितना आकर्षक और जिज्ञासा जगाने वाला है, इसका भीतरी भाग उतना ही रहस्यमय, विगोपित और सामंती सौंदर्य का केन्द्र है।

दुर्ग का द्वार शिलादेवी के मंदिर को जाने वाले सीढ़ियोंदार मार्ग के मध्य से है, किन्तु इसका मुख्य द्वार आगे जाने पर है। कभी यहां मीणो पहरेदारों द्वारा दुर्ग की सुरक्षा की जाती थी। यद्यपि अभी भी मीणो ही पहरेदार हैं, किन्तु पहले जैसी बात अब कहां। पहले दुर्ग तक पहुंचना बड़ा कठिन था और अब राजघराने की अनुमति पर दुर्ग के भीतर तथा किसी भी भाग तक पहुंचा जा सकता है। कुछ वर्ष पूर्व खजाने की खोज में दुर्ग के भीतर खुदाई भी की गई थी और इसके स्थलों का जीर्णोद्धार करवाया गया था।

एक सुदृढ़ विशाल दुर्ग

देश में सर्वाधिक रूप से चिर्चित जयगढ़ दुर्ग को जयपुर राज्य का एक ऐसा दुर्ग माना गया है जो रक्षात्मक बना रहा। यों भी दिल्ली सम्राट से अच्छे संबंध होने के कारण कभी इस दुर्ग पर आक्रमण नहीं किए गए। अलबत्ता ऐसे इरादे अवश्य कई बार आक्रमणकारियों के मन में घर बनाए रहे।

कभी रात्रि के समय या वर्षाकाल में इस दुर्ग में रहने वाली रानियां दुर्ग के कच्चे रास्ते सेउस उद्यान में जाया करती थीं जो 'मावटा झील' के पास है। दुर्ग के पिछले द्वार पर खड़ी होकर रानियां आमेर कस्बे की ओर झांक लिया करती थीं जो सागर और आथूनी के कुण्ड की ओर है।

जयगढ़ दुर्ग की बनावट ऐसी है जैसे कि पहाड़ी के सिर पर ताज रख दिया गया हो या नीले गहरे समुद्र की सतह पर नाव ठहरी हो। अत्यंत आकर्षक इस दुर्ग को जयपुर राजधानी का 'रहस्य स्थल' भी कहा गया है। किन्तु दुर्ग तक पहुंचकर लगता है यह तो नगर नियोजनकर्ताओं की सूझबूझ और दूरदर्शिता का प्रतीक है। राजपूती शैली के उदाहरण के रूप में भी जयपुर को पहचाना गया है। जयगढ़ साहस और वीरता के इतिहास में जय का परिचायक रहा है।

जयगढ़ का तोपखाना

देश में यद्यपि युद्ध के दौरान तोपों का उपयोग बाबर के समय प्रारम्भ हुआ था और वे तोपें दुर्ग ध्वस्त कर सकती थीं, युद्ध में घोड़ों और हाथियों पर सवार योद्धाओं को दूर से मार सकती थीं तथापि उनका अधिक प्रचलन नहीं था। आमेर के जयगढ़ दुर्ग में तोप बनाने की प्रक्रिया १६वीं शताब्दी में शुरू हुई जब अकबर के सेनापति जयपुर के राजा मानसिंह (प्रथम) ने काबुल से तोप ढालने की तकनीक प्राप्त की और तोप ढालने के औजारों के माडल भी साथ लाए। मानसिंह के पिता और तत्कालीन शासक भगवान दास ने सन् १५८४ में आमेर में तोप बनाने का कारखाना स्थापित किया था। इसी तोपखाने में जयबाण, रामबाण, शिव बाण, तोज बदली, मुल्क मैदान, फतहजंग, मच्छबाण, बाणजारी, शेर जंग, रणाचण्डी, भैरवी, धूम बाण, माधुरी, नाहरमुखी, कड़क बीजली, सिंह बाण और नागिन नामक असंख्य तोपें बनाई गईं। युद्ध में ऐसी तोपों के गोलों के सामने योद्धा टिक नहीं पाते थे और धराशायी हो जाते थे।

– २५४, पद्मावती कालोनी, अजमेर रोड, जयपुर - ३०२०१९

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

कार्यकारिणी समिति की बैठक के निर्णय

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति की बैठक १५ अक्टूबर २००५ को सम्मेलन सभापति श्री मोहनलाल तुलस्यान की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने गत बैठक की कार्यवाही पढ़कर सुनायी जो सर्वसम्मति से स्वीकृत हुई।

महामंत्री की रपट की प्रतियां उपस्थित सदस्यों में वितरित की गई जिसे पढ़ने के उपरान्त सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया।

कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया की अनुपस्थिति में महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने वर्ष २००३-२००४ एवं २००४-२००५ का आय-व्यय का ब्यौरा एवं आर्थिक चिट्ठा बैठक में प्रस्तुत की। सदस्यों द्वारा आय-व्यय संबंधित कतिपय जिज्ञासाओं के समाधान के उपरान्त सर्वसम्मति से उक्त दोनों वर्षों के हिसाब को पारित किया गया।

श्री आत्माराम सोंथलिया, श्री अरुण गुप्ता आदि सदस्यों ने घाटे की पूर्ति के लिए ठोस एवं स्थायी कदम उठाने की आवश्यकता पर बल दिया।

श्री बंशीलाल बाहेती एवं श्री सांवरमल अग्रवाल के अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं फाउण्डेशन के प्रश्नों पर विस्तृत चर्चा हेतु अध्यक्ष श्री तुलस्यान के सुझाव पर उपसमिति का गठन किया गया जिसका चेयरमैन श्री आत्माराम सोंथलिया को बनाया गया एवं उन्हें श्री अरुण गुप्ता तथा श्री बंशीलाल बाहेती के साथ पिछली कार्यसमिति के लिए गए निर्णयों का अध्ययन करने तथा आवश्यकीय संशोधन को सुझाव के रूप में अपनी रिपोर्ट सहित प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया। २४ दिसम्बर २००५ की सायं स्थानीय विद्यामंदिर में आयोजित किए जा रहे सम्मेलन के ७१वां स्थापना दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के चयन का दायित्व उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा एवं महामंत्री श्री भानीराम सुरेका को दिया गया।

संयुक्त महामंत्री श्री रामअौतार पोद्दार ने सम्मेलन के स्थापना दिवस पर श्री नन्दकिशोर जालान एवं श्री दीपचन्द नाहटा की भांति ही सम्मेलन से दीर्घ दिनों से जुड़े किसी व्यक्ति का सम्मान करने का सुझाव दिया।

पंचम बंगला भाषा साहित्य पुरष्कार कार्यक्रम जुलाई २००६ के बाद करने का निर्णय लिया गया।

कोलकाता : वार्षिक साधारण सभा सम्पन्न

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की वार्षिक साधारण सभा २२ अक्टूबर २००५, शनिवार को सम्मेलन सभापति श्री मोहनलाल तुलस्यान की अध्यक्षता में मारवाड़ी सम्मेलन भवन में सम्पन्न हुई।

महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने गत वार्षिक सभा १६ नवम्बर २००३ की कार्यवाही प्रस्तुत की। इसमें रानीगंज की घटना के उल्लेख को अध्यक्ष द्वारा प्रादेशिक मामला बताने एवं उसे कार्यवाही में दर्ज नहीं करने के आदेशोपरान्त सर्वसम्मति से कार्यवाही को स्वीकृत किया गया।

कोषाध्यक्ष श्री हरि प्रसाद कानोड़िया की अनुपस्थिति में महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने सम्मेलन के वर्ष २००३-०४ एवं वर्ष २००४-०५ के आय-व्यय लेखा एवं आर्थिक चिट्ठे की छाया प्रतियों को सदस्यों को वितरित किया एवं उन्हें आवश्यक जानकारियां प्रदान की। सदस्यों ने अपने सुझाव दिए एवं फंड को मजबूत बनाने की दिशा में अधिक सक्रिय होने की आवश्यकता बताई।

सर्वसम्मति से उक्त दोनों वर्षों के आय-व्यय लेखा एवं आर्थिक चिट्ठे को स्वीकृत किया गया।

महामंत्री श्री सुरेका के आदेश से सम्मेलन की गतिविधियों का विस्तृत प्रतिवेदन की छाया प्रतियों को भी सदस्यों के मध्य वितरित किया गया। महामंत्री ने कहा कि सम्मेलन ने अपने उद्देश्यों के अनुरूप समय-समय पर समाज सुधार, सुरक्षा एवं समरसतामूलक विभिन्न कार्यक्रम अपने प्रांतीय एवं शाखा सम्मेलनों के माध्यम से आयोजित किए है। गुजरात, सिक्किम, छत्तीसगढ़, राजस्थान आदि राज्यों में प्रांतीय सम्मेलनों के गठन की दिशा में प्रयास मुखर है। उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की तदर्थ समिति द्वारा श्री सुरेन्द्र कुमार डालमिया को अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित किया गया है एवं उत्कल प्रांत का आगामी अधिवेशन ता. ८ जनवरी २००६ को किए जाने की संभावना है।

श्री बंशीलाल बाहेती के प्रस्ताव एवं श्री नवरतनमल सुराना के समर्थन पर मेसर्स पी.के. लीला एंड कं. को वर्ष २००५ से २००७ तक के लिए पुन: लेखा परीक्षक नियुक्त किया गया।

अध्यक्ष श्री तुलस्यान ने अपने कार्यकाल का यह अन्तिम वार्षिक साधारण सभा बताया तथा किसी भी प्रकार की त्रुटि एवं पीड़ा के

लिए सदस्यों से क्षमायाचना की। उन्होंने सदस्यों से प्राप्त स्नेह एवं सहयोग के लिए उनके प्रति आभार प्रदर्शित किया एवं सम्मेलन को विकास की उल्लेखनीय ऊंचाई तक पहुंचाने के लिए सभी सदस्यों को परस्पर प्रेम एवं भाईचारा के मार्ग पर चलने की गुजारिश की।

माननीय अध्यक्ष ने सभी सदस्यों से सम्मेलन के फंड निर्माण में सहभागिता निभाने का निवेदन किया।

अध्यक्ष श्री तुलस्यान द्वारा उल्लेखनीय सफलता के साथ दूसरा कार्यकाल पूरा करने पर उनके प्रति सर्वसम्मति से धन्यवाद प्रस्ताव पारित करते हुए कहा गया कि सम्मेलन के ६०-७० वर्षों के इतिहास में वह कार्य हुआ है जो अब तक नहीं हुआ था और वह है सम्मेलन भवन का खरीदा जाना जो कि श्री तुलस्यान जी एवं सम्मेलन के हितैषियों के प्रयास से संभव हो सका है।

सदस्यों ने सभा में कई महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किए। सम्मेलन भवन पर उनके प्रश्नों का उत्तर देते हुए श्री तुलस्यान ने कहा कि सम्मेलन भवन अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का है और रहेगा और मारवाड़ी सम्मेलन फाउन्डेशन ट्रस्ट-डीड अध्ययन करने के लिए श्री आत्माराम सोंथलिया के सभापतित्व में एक कमेटी बनाई गई है। उन्होंने भवन के नवीनीकरण कर इसे बहुउद्देशीय एवं समाजोपयोगी बनाने हेतु लगभग १.५० करोड़ की राशि के संग्रह की आवश्यकता बतायी एवं सदस्यों से इसमें सहयोग करने की अपील की।

अध्यक्ष द्वारा सदस्यों को उनके सहयोग, सुझाव, समर्थन एवं समर्पण के लिए धन्यवाद दिया गया।

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

कटक : श्री सुरेन्द्र कुमार डालमिया प्रान्तीय अध्यक्ष बने

१ अक्टूबर। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल के संयोजकत्व में गठित तदर्थ समिति द्वारा भुवनेश्वर एवं कटक में आयोजित की गई बैठकों में उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आगामी अध्यक्ष के चयन हेतु चर्चा की गई। बैठक में पूर्व प्रान्तीय अध्यक्ष सर्वश्री विश्वनाथ मारोठिया, पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मौजीराम जैन, बलांगीर शाखाध्यक्ष गौरी शंकर अग्रवाल, नन्दकिशोर अग्रवाल, हरिकिशन अग्रवाल, धनराज अग्रवाल उपस्थित थे। विस्तृत विचार-विमर्श के उपरान्त आगामी प्रान्तीय अध्यक्ष हेतु श्री सुरेन्द्र कुमार डालमिया का नाम श्री ओमप्रकाश लाठ ने प्रस्तावित किया जिसका अनुमोदन श्री शिव कुमार अग्रवाल ने किया। अध्यक्ष पद हेतु कोई और नाम नहीं आने पर संयोजक श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल ने सर्वसम्मति से उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष के रूप में **श्री सुरेन्द्र कुमार डालमिया** के नाम को चयन कर लिए जाने की घोषणा की। बैठक की अध्यक्षता भूतपूर्व प्रान्तीय अध्यक्ष श्री गजानन्द अग्रवाल ने की। बैठक के आयोजन का दायित्व श्री किशनलाल भरतिया ने वहन किया।

बैठक में कटक, टिटलागढ़, राउरकेला आदि के पदाधिकारियों सहित अन्य उपस्थित सम्माननीय गणमान्यों में थे सर्वश्री शान्ति कुमार अग्रवाल, गणेश प्रसाद कन्दोई, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, मनोज कुमार टिबरेवाल, हीरालाल सुलतानिया, शंकर लाल गोयनका, सन्तोष कुमार लाठ, रामनिवास अग्रवाल, लक्ष्मण महिपाल, ललित कुमार मोदी, सीताराम मोदी, चिरंजीलाल गोयल, अशोक हरलालका, भीखराज अग्रवाल, रामऔतार खेमका, रामेश्वर लाल भण्डारवाला, चेतन टेबरीवाल, शिवकुमार अग्रवाल, भगतराम गुप्ता, विजय कुमार अग्रवाल, श्री किशन अग्रवाल, सुरेश कुमार अग्रवाल आदि।

श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल के अनुसार उनकी नवमनोनीत प्रान्तीय अध्यक्ष श्री डालमिया से बात हुई एवं अगला प्रान्तीय अधिवेशन भुवनेश्वर में ८ जनवरी २००६ को आयोजित करना तय किया गया है। श्री ओ.पी. लाठ को आगामी अधिवेशन का चेयरमैन मनोनीत किया गया।

श्री सुरेन्द्र कुमार डालमिया इस अधिवेशन में प्रान्तीय अध्यक्ष का पदभार ग्रहण करेंगे।

श्री डालमिया ने प्रान्तीय अध्यक्ष पद पर अपने मनोनयन के उपरान्त अपने सम्बोधन में समाज द्वारा प्राप्त व्यापक समर्थन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उनके प्रति आभार प्रदर्शित किया एवं उड़ीसा में सम्मेलन को एक नया आयाम प्रदान करने के प्रति स्वयं को संकल्पित बताया।

५२ वर्षीय श्री डालमिया स्व. ओंकारमल डालमिया के सुपुत्र हैं एवं राजस्थान के चिड़ावा से सम्बन्ध रखते हैं। श्री डालमिया मुख्य रूप से व्यवसायी हैं। इनका सामाजिक जीवन प्रशंसनीय है। ये अति कर्मठ सामाजिक कार्यकर्त्ता एवं समाज सेवी हैं। ये स्वभाव से धार्मिक भी हैं।

भुवनेश्वर : श्री सुरेन्द्र डालमिया का अभिनन्दन एवं प्रान्तीय महामंत्री की घोषणा

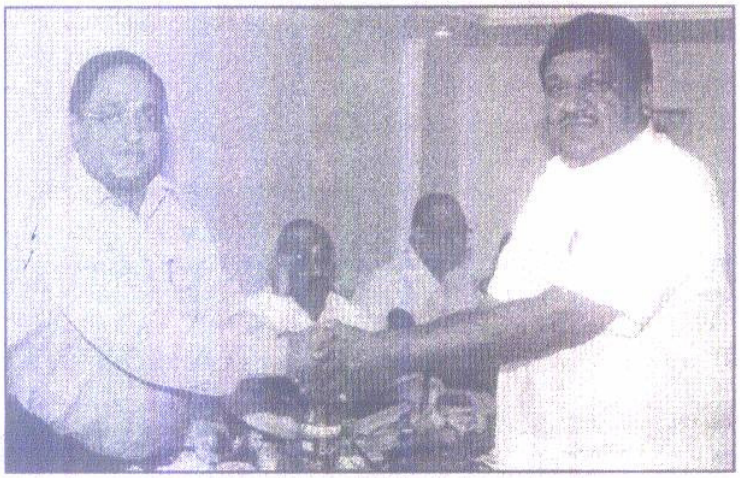

४ अक्टूबर। उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित होने पर भुवनेश्वर मारवाड़ी समाज द्वारा उद्योगपति श्री सुरेन्द्र कुमार डालमिया का नागरिक अभिनन्दन किया गया। नवनिर्वाचित प्रान्तीय अध्यक्ष श्री डालमिया ने सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए **श्री शिव कुमार अग्रवाल** का नाम प्रान्तीय मंत्री के लिए प्रस्तावित किया जिसे सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया।

समारोह का संचालन श्री शिव कुमार अग्रवाल ने किया। स्वरचित अभिनन्दन पत्र श्री अशोक पाण्डे ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर भुवनेश्वर के सर्वश्री भगतराम गुप्ता, ओम प्रकाश, चिरंजीलाल गोयल, पूनम दूगड़, चेतन टिकरीवाल, श्रीमती रानी खेमका, कटक से रामेश्वरलाल, सीताराम मोदी, जटनी के प्रेमचन्द्र अग्रवाल समेत अनेक गणमान्य उपस्थित थे।

झारखण्ड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन

देवघर : मूल्यों के गिरावट से सम्मेलन चिंतित - सीताराम शर्मा

मारवाड़ियों के सामाजिक व नैतिक मूल्यों में जो गिरावट आये हैं। उसके लिए अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन चिंतित है। समाज में फैल रही इस प्रकार की गतिविधियों को दूर करने की दिशा में मारवाड़ी समाज जागृत होकर सकारात्मक पहल करे, तभी समाज की ऐतिहासिक परंपरा बरकरार रहेगी। उक्त बातें अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सह बेलारूस कांसल श्री सीताराम शर्मा ने पत्रकारों से बातचीत में कही। उन्होंने मारवाड़ी समाज की वर्तमान स्थिति पर चिंता प्रकट करते हुए कहा कि मारवाड़ी समाज में संचय की प्रवृत्ति कम हुई है व फिजूलखर्ची बढ़ी है। इसलिए समाज स्वयं एक लड़ाई लड़ रहा है। समाज में संयुक्त परिवार टूट रहे हैं, तलाक की प्रवृत्ति बढ़ रही है। इसलिए इन कुप्रथाओं को समाप्त करने के लिए सम्मेलन चिंतित है। मारवाड़ी समाज समरसता में विश्वास करता है और समरसता के लिए साहित्य व भाषा अच्छा माध्यम है। इन मारवाड़ियों का महत्व सिर्फ समाज विशेष के लिए नहीं है, बल्कि राष्ट्र के लिए भी महत्वपूर्ण है। यह दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि हमारे देश में आर्थिक विषमता है। इसलिए देश की प्रगति में समाज का विशेष योगदान हो। आर्थिक विषमता खत्म करने के लिए समाज काम करे। आर्थिक विषमता के लिए व्यवस्था व सरकार की नीतियां जिम्मेवार है। इसलिए मारवाड़ी समाज यथासंभव गरीब, असहाय तबके के लोगों की सहायता के बारे में सोचे क्योंकि हम दान की प्रवृत्ति में विश्वास करते हैं, इसलिए हमें दान व सेवा की इस परंपरा को बरकरार रखते हुए देश व समाज में समरसता कायम करने के लिए सभी समाज के गरीब लोगों की आर्थिक, राजनैतिक एवं सामाजिक उत्थान की दिशा में काम करना चाहिए। मारवाड़ियों के बीच पनप रही कुरीतियों को दूर करने के लिए सम्मेलन सामूहिक विवाह व परिचय सम्मेलनों को बढ़ावा देना चाहिए।

श्री शर्मा ने झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन की एक बैठक के उपरान्त पत्रकार सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना १९३५ में की गई थी और उस समय इसका उद्देश्य नागरिक अधिकार प्राप्त करना था और अब समाज के दबे कुचले लोगों का कल्याण करना है। इस मंच का चौदह प्रांतों में शाखाएं हैं तथा ग्रामीण स्तर पर १० हजार शाखाएं हैं। समाज में फैले विषमता के लिए सरकार या व्यवस्था दोषी है किन्तु संपन्न मारवाड़ी समाज के लोगों को गरीब और लाचार लोगोंके लिए उत्थान का काम करना चाहिए जिसमें अभी कमी आयी है। उन्होंने कहा कि संगठन की मजबूती के लिए दिसम्बर या जनवरी में झारखण्ड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन का आयोजन देवघर में होगा। इस अवसर पर उनके साथ अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री भानीराम सुरेका, प्रान्तीय अध्यक्ष गोविंद प्रसाद डालमिया सहित दर्जनों लोग उपस्थित थे।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

मुजफ्फरपुर : श्री किशोरीलाल अग्रवाल प्रांतीय संयुक्त महामंत्री बनाए गए

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला ने प्रांतीय संयुक्त महामंत्री के लिए किशोरी लाल अग्रवाल को मनोनीत किया है। इस पर मुजफ्फरपुर सम्मेलन परिवार के सत्यनारायण तुलस्यान, नवल किशोर सुरेका, राजी कुमार केजड़ीवाल, साहेबगंज शाखा अध्यक्ष गिरधारी लाल अग्रवाल, मंत्री मनोज कुमार जाजोदिया ने हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि किशोरी लाल अग्रवाल के मनोनयन से उत्तर बिहार में मारवाड़ी सम्मेलन के कार्य प्रगति करेगा।

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन

शिवसागर : प्रान्तीय पदाधिकारियों का सांगठनिक दौरा

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के पदाधिकारियों के आगमन पर एक साधारण सभा का आयोजन किया गया। सभा का संचालन शिवसागर शाखा के अध्यक्ष श्री सत्यनारायण दाधीच ने किया। मंत्री श्री विजय कुमार चित्तावत ने कहा कि जोरहाट अधिवेशन के उपरान्त प्रांतीय कार्यकारिणी के सदस्यों का शाखाओं से सम्पर्क हेतु यह प्रथम दौरा है जिसमें प्रांतीय कार्यकारी अध्यक्ष श्री विजय कुमार जी मंगलूनिया ने किया। उपाध्यक्ष श्री प्रदीप खदरिया, महामंत्री श्री बाबुलाल गगड़ एवम् कार्यकारिणी अध्यक्ष जुगलकिशोर सिंघी उपस्थित थे। पूर्वोत्तर सम्मेलन के नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल बाकोलीवाल के आकस्मिक निधन पर मौन प्रार्थना की गई। समाज विकास एवम् जन जागरण के लिए लोगों ने अपने विचार एवम् सुझाव प्रस्तुत किये।

विजय कुमार मंगलुनिया ने कहा कि लड़कियों के छात्रावास के लिए मुख्यमंत्री महोदय से सम्पर्क जारी है। जल्द ही कार्यक्रम में परिणित हो जाएगा। श्री प्रदीप खदरिया ने कहा कि समाज को विघटित होने से हमें बचाना है। महामंत्री श्री बाबुलाल गगड़ ने कहा कि समाज में ऐसे रचनात्मक कार्य करने हैं जिससे समाज को एक सूत्र में बांध सके। सम्मेलन समाचार पत्रिका का विगत साढ़े तीन साल से प्रकाशन होता आ रहा है जिसमें शाखाओं के कार्यक्रमों को प्रकाशित किया जाता है जिसका २५०/- रु. तीन साल का शुल्क है। हमें ज्यादा से ज्यादा इस पत्रिका का सदस्य बनाना चाहिए। कार्यकारी अध्यक्ष श्री जुगलकिशोर सिंधी ने अपने वक्तव्य में कहा कि शाखा का आयोजन एवम् सम्पर्क अच्छा है। शाखाएं मजबूत होगी तो प्रान्तीय शाखा भी मजबूत होगी। श्री देवकीनंदन बंसन ने धन्यवाद देते हुए कहा कि आज आत्मसंयम एवम् चिन्तन की आवश्यकता है। विवाह विच्छेद, सामाजिक संस्कारों की कमी पैसों का प्रदर्शन यह सभी विचारणीय विषय है। सर्वश्री जगदीश प्रसाद झुरिया, जुगलकिशोर बाहेती ने भी अपने विचार रखे। सभापति ने कहा कि समय-समय पर प्रान्तीय एवम् केन्द्रीय पदाधिकारिगण का शाखाओं में आगमन एवम् संपर्क तथा मार्गदर्शन से गति प्राप्त होती है। शाखाओं का उत्साह बढ़ता है। हमें विवाह के मांगलिक अवसर पर शालीनता एवम् सादगीपूर्ण कार्य सम्पन्न करना चाहिए। अपने समाज में विवाह विच्छेद की समस्याओं का निराकरण करना जरूरी है।

जोरहाट : प्रांतीय पदाधिकारियों की बैठक में लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय

प्रांतीय पदाधिकारियों की बैठक में निम्नलिखित महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये।

१. माननीय अध्यक्ष की आकस्मिक मृत्यु के पश्चात् रिक्तता की पूर्ति हेतु नये चुनाव कराये जायेंगे।

२. सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष के निर्वाचन हेतु आगामी ता: ६-११-०५ को प्रादेशिक सभा की बैठक जोरहाट में बुलाई जाए।

३. अध्यक्ष का चुनाव वर्तमान संविधान के अंतर्गत कराये जायेंगे।

४. अध्यक्ष को चुनाव हेतु श्री नेमीचंद करनानी को निर्वाचन अधिकारी नियुक्त किया गया, जिनके द्वारा चुनाव के कार्यक्रम एवं अन्य अधिसूचना जारी की जाएगी।

५. अध्यक्षीय चुनाव फरवरी ०५ में हुए अधिवेशन के अंतर्गत जारी की गई मतदान सूची के आधार पर ही कराये जायेंगे एवं जिन शाखाओं के शुल्क ३० सितम्बर ०५ तक प्रेषित कर दिये जायेंगे उन्हें मतदान का अधिकार प्राप्त होगा।

६. नये संशोधन के अनुसार अब शाखा कार्यकारिणी का कार्यकाल भी दो वर्ष का होगा, एवं पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन के रूप में जानी जायेगी।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन

औरंगाबाद : आगामी राष्ट्रीय अधिवेशन

७-८ जनवरी २००६ को

महिला सम्मेलन द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका 'संकल्प' से प्राप्त सूचनानुसार अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन का राष्ट्रीय अधिवेशन ७ एवं ८ जनवरी २००६ को नागपुर में होना निश्चित हुआ है।

संपादिका सौ. सरोज बगड़िया ने प्रदेश एवं शाखा अध्यक्षाओं से 'महासंकल्प' के शुभकामनाएं एवं २००४-०६ के कार्यकाल की संक्षिप्त रिपोर्ट राष्ट्रीय कार्यालय में १ दिसम्बर २००५ तक भेजने का अनुरोध करते हुए सदस्याओं से ज्यादा से ज्यादा संख्या में नागपुर पधारने का भी अनुरोध किया है।

महिला सम्मेलन की महाराष्ट्र राज्य की औरंगाबाद, खामगांव, हिवरखेड, हिंगोली, नागपुर, शाखाओं, उड़ीसा राज्य की कटक, ढेकनाल, जूनागढ़, कांटाबाजी, अनगुल, भुवनेश्वर, खेतराजपुर, झारसुगुड़ा, धर्मगढ़, भवानी पटना, जय पटना, राजा खरियार, बालेश्वर, ताल्चेर, सोनपुर, सैंताला, केसिंगा, लोईसिंगा, खुर्दा, क्योंझर, सम्बलपुर शाखाओं, बिहार की पटना सिटी, बखरी बाजार, भागलपुर, झारखण्ड की साहिबगंज, चास बोकारो, रांची, गिरीडीह, देवघर, झरिया, धनबाद, पश्चिम बंगाल की बराकर, कोलकाता, मध्य प्रदेश की महु, इन्दौर पूर्वी क्षेत्र, इन्दौर पश्चिमी क्षेत्र, राजस्थान की जोधपुर शाखाओं द्वारा जुलाई २००५ तक अनेकों समाज उन्नयन, मानवतामूलक, शैक्षणिक, धार्मिक, सांगठनिक, सांस्कृतिक आदि कार्यक्रम एवं रक्तदान एवं विविध प्रशिक्षण शिविर के आयोजन किए गए।

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच

टिटिलागढ़ : स्कूल परिसर में 'अमृत धारा' का उद्घाटन

टिटिलागढ़ शाखा द्वारा अपने राष्ट्रीय कार्यक्रम 'अमृत धारा' के अंतर्गत स्थानीय प्रभावती पब्लिक स्कूल परिसर में छात्रों हेतु शीतल पेयजल की व्यवस्था हेतु मशीन (वॉटर कूलर) युक्त प्याऊ की स्थापना की गई। जिसका युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बलराम जी सुल्तानिया ने किया। नगर पालिका परिषद के अध्यक्ष श्री शुभांशु दास पार्षद श्री दीपक समादार एवं प्रकाश सराफ स्कूल के अध्यक्ष वरिष्ठ श्री भक्त बंधु स्वाई, प्रींसिपल श्री प्रशांत रायगुरु, श्री प्रमोद सराफ मंच के अध्यक्ष श्री रिंकू अग्रवाल, सचिव श्री भूपेन्द्र कुमार जैन एवं कोषाध्यक्ष श्री सजन कमानी सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।

मंच पहले भी इस तरह के दो प्रोजेक्ट एक स्थानीय रेलवे स्टेशन में दूसरा स्थानीय सरकारी चिकित्सालय में रोगियों एवं उनके परिजनों हेतु कर चुका है। अमृत धारा प्रोजेक्ट के साथ साथ श्री बलराम सुल्तानिया के कर कमलों से सरकारी चिकित्सालय परिसर में रोगियों के परिजनों हेतु खाना पकाने के लिए मंच द्वारा नवनिर्मित 'रसोई घर' का उद्घाटन भी हुआ।

मंच के टिटिलागढ़ शाखा के कोषाध्यक्ष श्री सजन कमानी ने बताया कि आज अग्रवाल समाज के अग्रपुरुष महाराजा जी अग्रसेन के जयंती दिवस पर मुख्य मार्ग स्थित शास्त्री चौक एवं पुराने बैंक चौके के मध्य एक चौक को महाराजा श्री अग्रसेन चौक के नाम से नामाकरण किया गया है। उक्त चौक का उद्घाटन भी श्री बलराम जी सुलतानिया के हाथों हुआ।

टिटिलागढ़ नगर में महाराजा श्री अग्रसेन जयंती का उत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया गया।

अन्य संस्थाएं

देवघर : चक्षु ऑपरेशन एवं चश्मा वितरण शिविर सम्पन्न

देवघर (झारखण्ड) में आयोजित नि:शुल्क चक्षु परीक्षण एवं चश्मा वितरण शिविर का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा। साथ में हैं श्री अनिल पोद्दार, श्री राम गोपाल बागला, सीकर नागरिक परिषद् के अध्यक्ष श्री घनश्याम प्रसाद शोभासरिया, सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका एवं परिषद सचिव श्री दामोदर प्रसाद विद्यावतका।

१६ अक्टूबर २००५। सीकर नागरिक परिषद (कोलकाता) एवं कुम्हारटोली सेवा समिति, देवघर शाखा के द्वारा चक्षु आपरेशन एवं चश्मा वितरण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष सीताराम शर्मा ने दीप प्रज्वलित कर किया। अपने उद्घाटन भाषण में श्री शर्मा ने कहा कि झारखंड गरीबों का राज्य है, झारखंड राज्य गरीब नहीं है। आज यहां मानव सेवा के रूप विभिन्न दलों के नेता संयुक्त मोर्चा के रूप में उपस्थित हुए हैं। कोई भी सरकार बिना गैर सरकारी संस्था के सहयोग से ही कार्य नहीं करती है। सरकार एवं संस्थाओं के बीच तालमेल होना जरूरी है। यहां बाहर से आकर बसने वाले सभी का झारखंड कर्मभूमि ही नहीं मातृभूमि भी है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे परिषद अध्यक्ष घनश्याम प्रसाद सोभासरिया ने स्वागत भाषण में कहा कि परिषद ने नि:शुल्क नेत्र परीक्षण शिविर एवं आंख ऑपरेशन शिविर के क्षेत्र में कोलकाता सहित पश्चिम बंगाल में विगत दो वर्षों में तकरीबन १००० लोगों का आंख आपरेशन एवं २००० लोगों को चश्मा वितरित किए हैं। संस्था द्वारा पश्चिम बंगाल एवं राजस्थान में कई सेवा कार्यों का संचालन हो रहा है जिसमें आंख आपरेशन, चश्मा वितरण पाठ्य सामग्री वितरण, मेधावी छात्र-छात्राओं को सम्मानित करना आदि शामिल है। पश्चिम बंगाल में ताड़केश्वर, उलबेड़िया, जदुबेड़िया एवं राजस्थान में सीकर व धोद में होम्योपैथिक चिकित्सालय का संचालन किया जा रहा है। उन्होंने झारखंड सरकार से भूमि की मांग करते हुए कहा कि भूमि उपलब्ध होते ही परिषद द्वारा नेत्रालय देवघर में खोली जाएगी।

समिति के परियोजना अध्यक्ष श्री राम गोपाल बागला ने कहा कि समिति ने परिषद के सहयोग से एक पुनीत कार्य किया है और रोगियों को सुदूर गांवों से खोजकर उन्हें लाभ पहुंचाया गया है। पूर्व में भी हाइड्रोसिल एवं हर्निया का नि:शुल्क आपरेशन भी कराया गया था। यहां ६५० लोगों को नि:शुल्क चश्मा वितरण किया गया है एवं २०० लोगों का मुफ्त आपरेशन भी किया जाएगा। पूर्व मंत्री बिहार सरकार कृष्णानन्द झा ने कहा कि समाज के गरीब तबके का सेवा कार्य कभी भी व्यर्थ नहीं जाता है। उन्होंने समिति को हरसंभव मदद करने की बात भी कही।

मधुपुर विधायक राजपलिवार ने राज्य सरकार से मिलकर परिषद को भूमि उपलब्ध कराने का आश्वासन भी दिया। मधुपुर में भी ऐसे शिविर आयोजन करने की मांग परिषद से किया।

देवघर विधायक कामेश्वरनाथ दास ने भूमि उपलब्ध कराने के लिए सरकार से बात तथा प्रशासन से बात करने की बाते कही। शिविर को गोविन्द प्रसाद डालमिया, लालमणि फलाहारी, त्रिलोकचंद बाजला, दामोदर बिदावतका, ओमप्रकाश छावछरिया एवं अनिल पोद्दार ने भी सम्बोधित किया। मंच संचालन सुभाष मुरारका एवं धन्यवाद ज्ञापन अनिल पोद्दार ने किया। इस अवसर पर मंचासीन अतिथियों को शॉल एवं प्रतिकचिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

हैदराबाद : महेश बैंक का २८वां स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

दी ए.पी. महेश को-ऑपरेटिव अर्बन बैंक लि. का २८वां स्थापना दिवस समारोह हैदराबाद में सम्पन्न हुआ, जिसमें बैंक के पूर्व पदाधिकारी, निदेशक और प्रबंधकों का सम्मान वर्तमान निदेशक मण्डल ने किया। बैंक के नव-निर्वाचित चेयरमैन श्री रमेश कुमार बंग ने पूर्ववर्ती निदेशक मण्डलों की महत्ता को रेखांकित करते हुए कहा कि कोई भी वर्तमान, अतीत को नजरअंदाज कर सुदृढ़, सुविकसित और सुरक्षित भविष्य का निर्माण नहीं कर सकता और जब अतीत विशिष्ठ उपलब्धियों से परिपूर्ण हो तो किसी भी स्थिति में विस्मृत नहीं किया जा सकता। उन्होंने अपने स्वागत भाषण में कहा कि महेश बैंक के विगत २८ वर्षों का गौरवपूर्ण इतिहास अथक परिश्रम और नि:स्वार्थ सेवा-भाव का साक्षी रहा है। वर्तमान पदाधिकारियों ने पूर्व पदाकिारियों का पुष्पहार, शॉल एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया। निवर्तमान वाईस चेयरमैन डॉ. आर.एम. साबू ने कहा कि बैंक जिस गति से प्रगति की रहा पर अभी तक आगे बढ़ती रही है, उस गति को कायम रखना आवश्यक है। कार्यक्रम का संचालन महेश बैंक प्रबंध निदेशक श्री आर.एस. जाजू ने किया। बैंक के महाप्रबंधक श्री उमेशचन्द्र असावा, उप-महाप्रबंधक श्री भगवानदास विजयवर्गीय एवं शाखा प्रबंधकों ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना योगदान दिया। बैंक के वर्तमान सीनियर वाईस चेयरमैन श्री पुरुषोत्तमदास मानधना ने उपस्थित सदस्यों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

चेन्नई : श्री अग्रवाल समाज के चुनाव सम्पन्न

२१ सितम्बर २००५। श्री अग्रवाल समाज (मद्रास) की नवीं आमसभा में आगामी सत्र (२००५-०७) के लिए निम्नलिखित पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी समिति के सदस्यों को सर्वसम्मति से चुना गया, जिसकी घोषणा चुनाव अधिकारी श्री ललित कुमार लाठ ने की :-

अध्यक्ष - श्री संतोष लाठ, उपाध्यक्ष- श्री हरिशंकर अग्रवाल, श्री मनमोहन अग्रवाल, महासचिव- श्री रमेश रमेश गुप्त 'नीरद', सचिव - श्री सांवरमल खेमका, कोषाध्यक्ष - श्री चंद्र प्रकाश लोहिया।

कार्यकारिणी समिति के सदस्यों में - सर्वश्री एस.के. तोदी, एस.के. केडिया, सीताराम गोयल, गणेश पटवारी, बसेसरलाल गोकुलका, हरिश कुमार सांधी, सुनील बंसल, एन.पी. चौधरी, नारायण प्रसाद अग्रवाल एवं महादेव लाल खेमका।

भू.पू. अध्यक्ष श्री सुरेश गुप्ता ने अपने कार्यकाल में सदस्यों का भरपूर सहयोग मिलने हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया। वर्तमान अध्यक्ष श्री लाठ ने लोगों से हावी योजनाओं को साकार करने हेतु सहयोग की अपेक्षा की।

कोलकाता : राजस्थान परिषद का द्वि-वार्षिक चुनाव सम्पन्न

५ अक्टूबर। राजस्थान परिषद की वार्षिक साधारण सभा का अयोजन श्री जुगलकिशोर जैथलिया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। परिषद के कार्यों की वार्षिक रपट महामंत्री श्री अरुण प्रकाश मल्लावत ने रखी एवं ३१ मार्च २००५ को सम्पन्न हुए वर्ष का लेखा परीक्षित हिसाब अर्थ मंत्री श्री गोविन्द नारायण काकड़ा ने रखा जो सर्वसम्मति से पारित किया गया। अधिवेशन में परिषद के द्वि-वार्षिक (२००५-२००६) निर्वाचन भी सर्वसम्मति से सम्पन्न हुए जिसमें निम्न कार्यकारिणी गठित की गई :-

अध्यक्ष - श्री शार्दुल सिंह जैन, उपाध्यक्ष- सर्वश्री जुगलकिशोर जैथलिया, सुन्दरलाल दूगड़, महावीर प्रसाद नारसरिया एवं परशुराम मूंदड़ा, महामंत्री- श्री अरुण प्रकाश मल्लावत, संयुक्तमंत्री- श्री अनुराग नोपानी एवं श्री सम्पत माणधनिया, अर्थमंत्री- श्री रुगलाल सुराणा (जैन), संगठनमंत्री श्री गोविन्द नारायण काकड़ा एवं आयोजन मंत्री- श्री बंशीधर शर्मा निर्वाचित हुए।

कार्यकारिणी के सदस्य हेतु सर्वश्री दीपचन्द नाहटा, नेमचन्द कन्दोई, आशाकरण बैद, जुगलकिशोर सिखवाल, जगदीश चन्द्र एन. मूंदड़ा, महावीर बजाज, सुशील सिताणी, रतनलाल नाहटा, रणजीत सिंह भूतोड़िया एवं राजगोपाल पसारी निर्वाचित हुए।

राउरकेला : राजस्थान परिषद के पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी की घोषणा

राजस्थान परिषद, राउरकेला के पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों - २००५-०६ श्री काशी प्रसाद झुनझुनवाला- संरक्षक, श्री महावीर प्रसाद लाखोटिया - अध्यक्ष, श्री देवी प्रसाद अग्रवाल - नि. अध्यक्ष, श्री छत्तर सिंह गोलछा- उपाध्यक्ष, श्री

मुसद्दी लाल शर्मा- उपाध्यक्ष, श्री गोपाल कृष्ण जाखोदिया - सचिव, श्री महावीर प्रसाद लोसलका- नि. सचिव, श्री अरुण कुमार पारीक- सह सचिव, श्री शैलेन्द्र कुमार मारोठिया- सह सचिव (मनोनीत), श्री बजरंगलाल शर्मा- कोषाध्यक्ष, श्री मोहनलाल केजरीवाल-सह कोषाध्यक्ष, श्री रामअवतार टिबरेवाल- लेखा जोखा परीक्षक।

कार्यकारिणी सदस्य : सर्वश्री हरिकृष्ण शर्मा, तरुण मलाणी, जुगलकिशोर शर्मा, सीताष अजमेरा, राजेश भट्टड़, अरुण कुमार सोमाणी, विनोद कुमार शर्मा, विनोद नरेड़ी, फकीर चन्द मित्तल, नरेश खेतान, कमलेश सारडा, विनय कुमार शर्मा, विजय कुमार महेश्वरी, सूरज माखड़ीया एवं नारायण महेश्वरी।

सम्मान/बधाई

कोलकाता : श्री मोहनलाल तुलस्यान मदर टेरेसा अन्तर्राष्ट्रीय शताब्दी सम्मान से सम्मानित

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष मोहनलाल तुलस्यान को गत २० सितम्बर २००५ को सेंट जेवियर्स कालेज सभागार में एक विशेष कार्यक्रम में सामाजिक क्षेत्र में विशिष्ट अवदान के लिए मदर टेरेसा अन्तर्राष्ट्रीय शताब्दी सम्मान से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सम्मानित लोगों में डा. प्रताप चन्द चन्दर (शिक्षा), स्वामी नित्यानंद महाराज, राजू भारत (समाज सेवा), शैलेन मन्ना (क्रीड़ा), राजेश खन्ना, मन्ना डे, शांतनु महापात्र (संस्कृति), हर्षवर्द्धन नेवटिया (उद्योग) प्रमुख थे। श्री नेवटिया की आरे से उनकी माता ने यह सम्मान ग्रहण किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष मोहनलाल तुलस्यान को मदर टेरेसा अन्तर्राष्ट्रीय शताब्दी सम्मान प्रदान करते विशप पीएचपी राजू।

श्री रमेश कुमार बंग का पुष्पहार द्वारा स्वागत करते हुए बैंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री आर.एस. जाजू।

इस अवसर पर श्री तुलस्यान ने समाज सेवा के क्षेत्र में और भी सक्रियता से काम करने के अपने संकल्प को दोहराया एवं नई पीढ़ी को इस दिशा में आगे आने का आह्वान किया।

हैदराबाद : श्री रमेश कुमार बंग महेश बैंक के चेयरमैन निर्वाचित

३१ जुलाई को सम्पन्न हुए दि ए.पी. महेश को-आपरेटिव अर्बन बैंक लि. (मल्टी स्टेट शेड्यूल्ड बैंक), के निदेशक मण्डल चुनाव में सर्वश्री रमेश कुमार बंग, भगवानदास जाजू, श्रीमती रत्नमाला साबू, देवेन्द्रकुमार झंवर, चैनसुख काबरा, सूर्यप्रकाश सारडा, श्रीमती पुष्पा बूब, पुरुषोत्तमदास मानधना, हरिकिशन बजाज, आनन्दप्रकाश डालिया, अशोककुमार गिलडा, रामप्रकाश भण्डारी,

रामनिवास सोनी, घनश्यामदास काकांणी एवम् श्री नारायणलाल बाहेती निदेशक निर्वाचित हुए। उक्त चुनाव में श्री रमेश कुमार बंग सर्वाधिक ५२८१ मत प्राप्त कर निर्वाचित निर्देशकों में शीर्ष पर रहे। श्री बंग सन् १९९४ में प्रथम बार निदेशक निर्वाचित हुए। सन् १९९७ में पुन: निदेशक चुने गए और सन् २००२ में आपको बैंक का वाईस चेयरमैन चुना गया। आपको बैंक का सबसे युवा निदेशक और युवा चेयरमैन बनने का गौरव प्राप्त है। श्री बरमेश कुमार बंग आन्ध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष भी हैं।

हैदराबाद स्थित बैंक के मुख्यालय पर ३ अगस्त को सहकारी विभाग द्वारा नवनिर्वाचित निदेशकों की बैठक आयोजित की गई, जिसमें श्री रमेश कुमार बंग का चेयरमैन, श्री पुरुषोत्तमदास मानधना को सीनियर वाईस चेयरमैन एवम् श्रीमती पुष्पा बूब को वाईस चेयरपर्सन चुना गया। नवनिर्वाचित चेयरमैन एवं निदेशक मण्डल का कार्यकाल पांच वर्ष का है।

इस अवसर पर नवनिर्वाचित चेयरमैन श्री रमेश कुमार बंग ने बैंक के पूर्व पदाधिकारियों एवं अंशधारकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वर्तमान वर्ष में बैंक के अग्रिम १५० करोड़ से बढ़ाकर २०० करोड़ रुपये करना तथा ग्रास एन.पी.ए. को पच्चीस प्रतिशत तक घटाना उनकी पहली प्राथमिकता होगी।

कोलकाता : श्री गोयनका को अवार्ड

२७ अक्टूबर। इंडियन चेम्बर आफ कामर्स के यंग लीडर्स फोरम की ओर से आरपीजी इंटरप्राइजेज के उपाध्यक्ष संजीव गोयनका को वर्ष २००५ के लिए आउटस्टैंडिंग यंग एचिवर्स अवार्ड से सम्मानित किया गया। राज्य के मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य ने श्री गोयनका को यह अवार्ड प्रदान किया। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने राज्य के औद्योगिक विकास में आरपीजी समूह तथा संजीव गोयनका के योगदान की सराहना की।

इस अवसर पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने श्री गोयनका को बधाई दी।

मोतीपुर : श्री संजय अग्रवाल सम्मानित

श्रावणी मेले के बाद कांवरियों की सेवा में अच्छे योगदान के लिए मारवाड़ी युवा मंच के प्रांतीय सहायक मंत्री चौधरी संजय अग्रवाल को जिलाधिकारी द्वारा पुरस्कृत किये जाने पर उन्हें बधाई दी गई है, बधाई देने वालों में संदीप जाला, रमेश अग्रवाल, डब्बु, दिलीप मोदी, मनीष शर्मा, राजकुमार, मुरारी नथानी आदि शामिल हैं।

नई दिल्ली : आशा रानी लखोटिया को साहित्य सरस्वती सम्मान

सुप्रसिद्ध कवयित्री, समाज सेविका श्रीमती आशा रानी लखोटिया को खान:काह सूफी दीदार शाह चिश्ती, कल्याण (महाराष्ट्र) द्वारा उनेक हिन्दी साहित्य सेवा हेतु 'साहित्य सरस्वती' मादन-उपाधि से सम्मानित किया गया है। श्रीमती लखोटिया की प्रसिद्ध पुस्तकों में हैं 'राजस्थानी गीत' 'जीवन पथ' में।

दुर्गा पूजा के अवसर पर भारती फ्लेरिस्ट के उद्घाटन समारोह में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका का सम्मान करते हुए श्री रवी खेडवाल व अन्य।

शोक सभा / श्रद्धांजलि

मोतीपुर मारवाड़ी युवा मंच के संस्थापक शिवकुमार पोद्दार की माता के निधन पर चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की। सभा की अध्यक्षता प्रांतीय महासचिव चौधरी संजय अग्रवाल ने की।

Wonder Images Pvt. Ltd.

we print on
FLEX
SAV
MESH
ONE-WAY VISION
FLOOR ETCHING
UK MEDIA
LAMINATION
CANVAS
Etc.

Contact :-
22155479
22155480
9830045754
9830051410
9830425990
9830768372
9830590130
9831854244
9231699624

154, LENIN SARANI,
KOLKATA-13
2nd Floor

SREI, committed to the growth of the country's core sector has gone far beyond providing finance and refinance for construction equipment and spare parts.

Today, SREI provides valuable inputs as financiers and consultants across infrastructure projects and roads, power and ports in particular.

Fuels the growth in the Indian transportation sector through attractive financial schemes for the commercial vehicle segment and automobiles.

Serves the international traveller through convenient foriegn exchange transactions.

Creates a better environment by funding equipment and projects that are environmentfriendly.

Ensures complete protection by providing an entire range of insurance services.

Provides a range of investment oppurtunities through Government bonds, securities, fixed deposits and mutual funds.

Over the years SREI has built considerable expertise in the management of assets and financial services.

With its widespread network across the country, SREI is ready to meet growing customer needs with tailor-made solutions.

SREI is totally prepared and committed to stand by you to meet your diverse requirements as a complete finance solutions company.

Financially yours,

SREI INTERNATIONAL FINANCE LIMITED

EQUITY PARTNERS IFC USA • DEG GERMANY • FMO HOLLAND

© 2003 SREI INTERNATIONAL FINANCE LIMITED

SREI Equik SREI Requik SREI Parts SREI Core SREI Auto SREI Monitor SREI Bhaskar

SREI Forex SREI Life SREI General SREI Money SREI Treasure SREI Capital

Viswakarma, 86C Topsia Road (South) Kolkata 700046 • Phone : 22850112-15/024-27 • Fax : 22857542
New Delhi Phone 23322274/90/23360894/23314030 • Bhubaneshwar Phone : 2545290/2522560/2545177
Mumbai Phone : 24968636/24968639/24973708 • Chennai Phone : 28555584/28555470-71
Hyderabad Phone : 55667919/55667920 • Bangalore Phone : 2276727/2271265/2235006

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700007
Phone : 2268-0319

To,